हमारि चिट्ठी

गढ़वाली साहित्य, समाज अर सृजन को दस्तावेज

अंक :1 वर्ष :2 अक्टूबर–दिसम्बर 2006, सहयोग :20 रु0

चिट्ठी परिवार

सम्पादक
मदन मोहन डुकलाण

सह–सम्पादक
आशीष सुन्दरियाल

संचालन
रानू बिष्ट

सहयोग
देवेन्द्र प्रसाद जोशी
डॉ. सुनील कैंथोला

प्रचार–प्रसार
रमेन्द्र कोटनाला
कुलानन्द घनसाला

आवरण चित्र
डॉ० सुनील कैन्थोला
(लाता गौं मा बिखौति पर पत्तर नृत्य)

Lokeh] i|dk'kd enu ekgu M|dyk.k }kjk
,&16] j{kki|je ¼ykMi|j½ ikLV jk;i|j
ngjknu&248008] Qku& 2788748 cV
i|dkf'kr vj
o [k.k
^le;&lk{;*]
15 Qkyr ykbu ngjknu cV efnrA

ई-मेल : chithee@rediffmail.com

वेबसाइट : www.angwal.org

ये अंक मा ...

लोकगीत	:		2
हमारि बात	:		3
खोज–खबर	:	बाद्यूं का स्वांग, जनान्यू स्वांग...../भीष्म कुकरेती	5
छ्वीं–बत्त	:	ग्लोबलाइजेशन का दौर... /आशीष सुन्दरियाल	14
बात–विचार	:	गढ़वालि भाषा का विकास..../दर्शन सिंह रावत	15
आज–ब्यालि	:	आर्केस्ट्रा का घपरोल मा..../सुलोचना परमार	17
ननि कथा	:	माँ की टक्क/गजेन्द्र नौटियाल	19
सच्चो–किस्सा	:	गजानन्द टोपी अर...../बालेन्दु बड़ोला	20
कविता	:	गिरीश सुन्दरियाल/विजय कुमार 'मधुर'	22
		विजयेन्द्र कुमाँई/चिन्मय सायर	
		राकेश भट्ट की कविताएं	
गीत	:	पाणी चौछ्वड़ि पाणी.../मदन मोहन डुकलान	25
	:	आज को जागर/ नेत्र सिंह असवाल	
पुराणि कलम	:	दीवो/स्व. चक्रधर बहुगुणा	26
साक्षात्कार	:	जीत सिंह नेगी/आशीष सुन्दरियाल	27
व्यंग	:	बीच–बीचा/नरेन्द्र कठैत	29
	:	घळचाघण्ड/प्रीतम अपच्छ्याण	31
इथैं–उथैं	:	मुम्बई मा गढ़वालि रंगमंच/गजेन्द्र ,दिनेश	32
साहित्य	:	बागी उप्पन की लड़ै/क.ला. डंडरियाल	33
चखन्यौ		र्‌यखड़ा/भीष्म कुकरेती	34

lnL;rk

lkykuk	100@&#I;k
vkthou	1000@& #I;k
lLFkkxr	2000@& #I;k

सम्पादन–संचालन पूरी तरह अवैतनिक अर अव्यवसायिक

मांगल

पैलि न्यूते पैलि न्यूते, बेदमुखी बरमा

आज चैन्द बरमा जी को काज।

तब न्यूते तब न्यूते औजी को बेटा

आज चहीन्दा बढ़ै को काज।

आज मैन न्यूति याले हल्दानू बाड़ी

आज चहीन्दा हल्दी को काज।

आज मैन न्यूति याले फूलों की डाळी

आज चहीन्दा फूलों को काज।

आज मैन न्यूति यालिन मंगळ्यानी नारी

आज चहीन्दा मांगळु को काज।

आज मैन न्यूति याले जुंडि-पुंडि गाई

आज चहींदा गोबर को काजा।

न्यूति याली न्यूती मैन सट्यों की बाड़ी

आज चहीन्दा मोतियों को काज।

हमारि चिट्ठी

गढ़वालि त्रैमासिक

गढ़वाली भाषा साहित्य को समग्र विकास

एक पहल एक प्रयास

पांडा का अड़यां अर वबरा का सट्ट

पांडा का अड़यां अर वबरा का सट्ट – या पुराणि मसल गढ़वाळि लिपि निर्माण का सिलसिला मा बिल्कुल फिट बैठद। जनकि राज्य बणणा बाद पहाड़ का साहित्य, समाज अर संस्कृति से जुड़्यां लोग आपस मा, इनो करा उनो करा – एक हैंका तै अड़ांदा रैगेन अर एक आदिम जैको गढ़वाळि भाषा से दूर-दूर तक क्वी सम्बन्ध नी छ, चंट बणिकै गढ़वाळि भाषा की अलग लिपि को स्वघोषित निर्माता त बणो हि छ – राज्यपाल जनी हस्ती का हाथों सम्मान तक ल्हीणा मा कामयाब ह्वेगे। अबि जबकि गढ़वाळि भाषा गाळ-ग्वीडों उगिड़ी विकास का बाटा मा ग्वाया लगौणी छ अर मानकीकरण को मुंडुरू अबि भि यीं भाषा का साहित्यकारों तै परेशान कनू छ इन मा यूं साब जी पर अलग लिपि बणाणै क्य आँतुरी ऐ, य बात समझ से परे छ। ये साब क्य यो नि जणदा कि कतनै भाषा इन छन जौंकी अपणी अलग लिपि नी छ वो देवनागरी लिपि मा हि पढ़ै-लिखे जांदन पर अपणा आप मा समर्थ अर समृद्ध भाषा छन।

जख तक गढ़वाळि भाषा को सम्बन्ध छ त गढ़वाळि भाषा अपणा-आप मा एक समृद्ध भाषा छ, आज न बल्कि सदियों बटे यीं भाषा मा साहित्य लिखे अर पढ़े जाणू छ। गढ़वाळि राजभाषा छै अर कतनै आदेश, आलेख, न्यायालय का निर्णय अर गजट प्रकाशन यीं भाषा मा उपलब्ध छन।

यख मा यो भि स्पष्ट कर्नों जरूरी छ जो लोग यो ब्वना छन कि गढ़वाळि लिपि बणाण को विरोध इलै हूणो छ कि या एक गैर-गढ़वाळि न् बणै वो सरासर भ्रम फैलाणौ काम कर्ना छन, गढ़वाळि लिपि बणाण को विरोध तब भि हूंदों अगर यो क्वी गढ़वाळि बणोदो, हाँ! अगर क्वी चाहे वो गैर गढ़वाळि हो या गढ़वाळि वास्तव मा समर्पित भाव से गढ़वाळि भाषा का संरक्षण अर सम्वर्द्धन का वास्ता काम करद त गढ़वाळि, समाज वेतै जरूर सिर आँखों मा बिठालो, पर लिपि निर्माण जना वेतुका अर सिरप सस्ती लोकप्रियता हासिल कर्ण वला कामों की कड़ी आलोचना कर्नी जरूरी छ।

आज गढ़वाळि समाज का सब्बि लोगुं की जिम्मेदारी छ कि वो गढ़वाळि भाषा तै विभ्रंशित अर नयी पीढ़ी तै भ्रमित कर्ण वळा इना कामो का खिलाफ अगनै आवन अर यूं लोगों की कड़ि भर्त्सना करीन्।

सरकार (किलैकि सरकार भि समाज को हि हिस्सा छ) को भि दायित्व छ कि वो इन कामों तैं बढ़ावा न दे अर भविष्य मा गढ़वाळि भाषा साहित्य अर संस्कृति से जुडयां कै भि काम मा गढ़वाळि

vvv

सम्पादक

b[xkl&cXoky dh
gkfnZd 'kqHkdkeukvk dk nxM

ढुण्डेश्वर महादेव पर्यटन विकास समिति, उत्तराखण्ड

सेमगढ़ ढुण्डसिर कड़ाकोट, ब्लाक कीर्तिनगर,
टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

अध्यक्ष
जितेन्द्र पंवार
मो.– 9358136362

उपाध्यक्ष
मकान सिंह राणा
मो.– 9412304467

कोषाध्यक्ष
महिपाल पंवार
मो.– 9719342929

सचिव
धनवीर रावत
मो.– 9412149307

कैंप कार्यालय एवं पत्राचार :

ÝM l dE;fud'ku] 11 xkYMu dkEiyDl
fu;j Vkou jLVkjV d yMh] elwjh
njHkk"k % ¼0135½&2631996

खोज-ख़बर

बाद्यूं स्वांग, जनान्यूं स्वांग अर भरत कु नाट्यशास्त्र

✍ भीष्म कुकरेती

हिंदी फिल्मूं का चरित्र अभिनेता स्वर्गीय सज्जन कुमार न् अपणी किताब "भरत नाट्यशास्त्र मा रससंपादन" की भूमिका मा ल्याख बल हिंदुस्तान मा नाटक सिखांद दैं नाटक शिक्षा प्रबंधन का बुबा सुकरात तैं माने जांद, पण (सज्जन कुमार को सही हिसाब से) असल मा नाटक शिक्षा प्रबंधन का असली अर सबसे पैली किताब च भरत की "नाट्यशास्त्र।" नाट्यशास्त्र तैं पंचम वेद बुले जांद। ये बड़ा पोथा मा नाटक मा क्या-क्या होण चयांद सबि कुछ च। इखमा सबसे अहम पाठ च नाटकू मा रससंपादन अर भावुं से नाटक मा नाटकीयता ल्हाणो, यांका अलावा पंचमवेद (नाट्यशास्त्र) मा नाट्य लेखन, नाटक का प्रकार, चरित्र-चित्रण, वेश-भूषा, ग्हैणा, समय-काल, स्थान-जगा, जाति कु वर्गीकरण, वाचकिता, दर्शक भेद, भाषा-भेद, अंग भेद, मंच विधि नाटक सूचना की अपरोक्ष विधि, याने कि नाटक का हरेक कूण्या, बिंदु पर सविस्तार चर्चा च। नाटक कु क्वी बि अंग अणभिड्यूं नी च।

सुकरात या निरंतर विकासवादी पुस्तक" दि ऑक्सफोर्ड कम्पेनियन टू दि थियटर ऐंड दि ऑक्सफोर्ड कम्पेनियन टु इंगलिश लिटरेचर' या निकौल की वर्ल्ड ड्रामा, ब्रिटिश ड्रामा, दि डेवलेपमेण्ट आफ थियेटर, हिस्टरी आफ क्रिटिसिज्म या इथगा सालुं मा 'ड्रामा' मैगजीनुं मा लिख्यां लेख या भारत मा नाटकूं पर लिख्यीं आलोचना कुछ नी च बल्कण मा भरत को नाट्यशास्त्र को आधुनिकीकरण ही च। बस भाषानुवाद या भाषाभावना मा ही बदलाव च। हिंदी मा जू बि आलोचना नाटकूं पर लिख्याण ी च वा जादातर अंग्रेजी या साम्यवादी विचारधाराऊं की ही नकल च अर दगड़ मा कुछ मौलिक समीक्षक बि ताणि मारण ा छन। भरत कु नाट्यशास्त्र असल मा 'कम्पलीट' या संपूर्ण च इलै इ अबि बि प्रासंगिक च।

भरत अर गढ़वाळै बादी :- नाट्यशास्त्र का रचयिता भरत तैं माने जांद। अर इन माने जांद बल नाट्य शास्त्र की रचना एक विद्वान न नि कार बल्कण मा भौत सा विद्वानूं को संग्रह च, असल मा पैल नाटककार अर नाट्य शास्त्री तैं भरत बुले जांद छौ। त नाट्यशास्त्र भौत सा भरतूं को काम च। ठीक च इख मा छ्वीं या घपरोळ की जगा नी च।

अब आंदो मि असली मुद्दा पर, गढ़वाळ मा जू बादी जात च वा जात भरतवंशी जात च, हालांकि बादी भरत शब्द को अपभ्रंश नी च पण बादी जात भरत वंशी जरोर च, इख मा मैं तैं क्वी शक की गुंजायश नि दिख्यांदी, तीन हजार साल पैल नाटककार, नाटकशास्त्रयूं सणि भरत बुले जांद छौ। अब भारत की कैं बि भाषा मा नाकटशास्त्रयूं सणि भरत नि बूले जांद, अलग-अलग लोक भाषौं मा भरत को रूपान्तर ह्वे ग्ये। गढ़वाळ मा बादी स्वांग कार या स्वांग शास्त्री ह्वेगेन। भगवान शिवजी तैं नाटक को स्त्रोत्री दिवता माने जांद। भरत शिव भक्त होंदा छा। बादी बि शिव भक्त छन अर इन माने जांद कि बादी शिवजी का मैल से पैदा ह्वेन। म्यार कौलेज का दगड्या प्रोफेसर गणेश सती 'गणी' की किताब बादी-दि फ्लावर्स ऑफ शिवा' मा यों पर पूरो वृतांत च। यीं किताब मा बाद्यूं की परेशान्यूं पर ही जोर छौ। सत्ती जी मसूरी मा असंगठित मजदूरूं का नेता छा त यीं किताब मा बाद्यूं स्वांग पर जादा कुछ नी लिखे ग्ये। हां! लोगु स्वांग मा अरूचि शुरू होण से बाद्यूं की परेशानी पर चित्रांकन जादा ह्वे।

लिख्यूं गढ़वाळी साहित्य मा बाद्यूं पर जु साहित्य मिल्दो वु काव्यात्मक (गीतु) साहित्य पर जादा मिल्दो। डॉ० शिवानंद नौटियाल, डॉ० चातक, डॉ० बाबुलकर, केशव अनुरागी, डॉ० ढौंडियाल या श्याम बुक डिपो (मि यीं. प्रकाशन संस्था तैं एक अभिनव, आदरणीय चिरस्मरणीय संस्थान माणदो) डॉ० सेमल्टी (वाद्य यंत्र) जन मनीषियूंन बाद्यूं पर जू बि ल्याख वु जादतर बाद्यूं गीत, ढौळ, बजाण वळा यंत्रु पर ही ल्याख, काव्यात्मक शैली या रोचकता होंद त गीतु पर चौतर्फा आकर्षण होंद अर

यां से बाद्यूं स्वांग-नाटक धर्मिता अणभिड्यूं रै ग्ये। जन-जन गढ़वाळ मा लिख्यूं साहित्य वृद्धि ह्वे तन-तन बाद्यूं कीमत मा बि गिरावट ऐ। बाद्यूं जु असली महत्त्व छौ वु छौ स्वांग भरण या स्वांग खिलण वु स्वतंत्रता आंदोलन अर स्वतंत्रता उपरांत कम ह्वे त यां से बि नजर मा बाद्यूं स्वांग पैथर ह्वे ग्ये। नया-नया संचार माध्यमूं न बि स्वांग विधा तैं पैथर धस्काई।

बचपन मा मिन बाद्यूं स्वांग देखिन अर अपण गौं जसपुर, ग्वील, मित्रग्राम, सिलोगी अर देरादूण का कुछ गौं मा बाद्यूं कथगा ही स्वांग देखिन अर जब मिन अब भरत कु नाट्यशास्त्र को अध्ययन कार त तब मैं सणि ज्ञान ह्वे कि बाद्यूं ह्वांग मां भरत कृत नाट्यशास्त्र की पूरी लौ-छौ रयीं च। हाँ! बादी अपण नाटकुं मा सामयिकता त ल्हाणा रैन पण अशिक्षा व फटफटाक बदलाव को दबाब का कारण नाटक को पैनोरामा (वाह्य शिल्प अर दर्शकूं परसेप्सन मा बदलाव) मा बदलाव नि ल्है सकिन अर गढ़वाळ मा स्वांग वृति या नाटक विधा को आधुनिकीकरण रुकि ग्ये। गढ़वाळ का स्कूलूं मा ध ीरेन्द्र वर्मा, उपेन्द्र नाथ अश्क अर मोहन राकेश या विजय तेंदुलकर जना शहरउन्मुखी बादशाह बैठी गेन त स्कुल्या यूं शहर्यूं तैं अंगीकार त नि कौरि सकिन पण दगड्या दगड़ अपण माटा बणयां स्वांग वृति से भि वंचित ह्वे गेन। गढ़वाळी स्वांग कख्याक बि नि राई, अश्क को " तौलिया" गौं जुगा नि छौ त गौं कु सामायिक स्वांग गढ़वाळ का शिक्षातंत्र मा छयीं नि छौ अर यां से गढ़वाळी नाटकूं पर दुतरफा मार पोड़ि।

भरत की चेली-गौं की जनानी :- भारत मा भरत क्वी वीर्यजनित जाति नि छै बल्कण मा एक लोकजनित जाति छै। जु बि स्वांग से आकर्षित होंद छौ वु भरत माने जांद छौ, भरत लोक पूरक वृति छै अर यो ही कारण छौ कि हमारा गढ़वाळ की जनानी बि स्वांग कर्मी छयी, गीतू मैनौं मा बिट़ या शिल्पकार जनानी गीत लगाणा अलावा स्वांग बि खिल्दा छा। यि जनानी असल मा भरत की चेली छयी। यूं जानन्यूं तई कैन बि नाट्यशास्त्र की फौर्मल ट्रेनिंग नि दे ह्वेली पण आश्चर्य यो च यूं जनान्यूं तैं नाट्यशास्त्र को श्रुतिप्रधान ज्ञान अवश्य छौ बाळापन मा जनान्यूं (बिट्ट अर शिल्पकार दुयी) का स्वांग दिख्यां छा अर जब भरत को नाट्यशास्त्र पौढ़ त पाई कि हमारी जनान्यूं मा नाट्य विध ा को क्रमगत ज्ञान श्रुति विधान से होणु छौ। अर आधुनिक नाटकशास्त्री जन कि विजय तेंदुलकर, दिनेश ठाकुर, कारंत थपलियाल, राजेन्द्र धस्माना, शाह, जीत सिंह नेगी, एच.एस. रावत, मारजोरी बोल्टन, अगाथ क्रिस्टी, सत्यदेवी दुवे, नाट्य विधा तैं अपणादन उनि हमारी जनानी बि नाट्य विधा की ज्ञानी छयी। सिर्फ पैनोरामा को अंतर छौ निथर मेरी ब्वे बि अपण समौ की नाटककार अर नाटक कलाकार इनी छै जन आज पृथ्वी थियेटर का कलाकार अर कृतिकार छन, मेरी गौं की वातौ ददि रद्दू इनी कलाकार अर कृतिकार छै।

नाट्क-स्वांग पर समीक्षा :- मि अग्वाड़ी की पंगत्युं मा जू बि समीक्षा लिखणू छौं गढ़वाळै बाद्यूं अर गढ़वाळै जनान्यूं कृत गद्यात्मक स्वांग पर आधारित ह्वेकी लिखणु छौं। त ह्वे सकद इखमा साहित्यकता या फोकटिया सिवालिजाइजेशन मा कमी रै जाली अर मैं तैं इखमा क्वी शरम ल्याज बि नी च।

जब दुख लचकद अर पुळ्याट उछाळि मारदोः- हौर साहित्यिक विधा अर नाटक या स्वांग मा एक मुख्य अंतर यो होंद कि स्वांग मा साहित्य हिटणु बि रौंद अर बचल्याणु बि रौंदु। कविता, कथा तैं पढ़ण पोड़द पण स्वांग मा भौतिक कार्यकलाप, ध्वनि, उज्यळू सब्यूं तैं दिखण पोड़द, पढ़ण मा अनुभव करण पोड़द पण नाटक-स्वांग मा अनुभव दिख्यांद बि च अर अनुभव तैं अनुभवित बि करे जांद। अनुभव करण अर अनुभव तैं हिदद, बैठद, बुलण स्वांगु मा हि संभव च।

म्यार गौं मा भरत की चेली यानी गौं की जनानी गीतूं मैना मा जूनी तौळ या चिमन्यूं उज्यळ मा स्वांग खिल्दा छा । एक स्वांग मैं तैं याद औंदु जख मा सासू क्रूर छै त ब्वारी मयळी। मी तैं अबि बि याद च जब सासू ब्वारी तैं धमकांदी छै या गाळी दींदी छै त ब्वारी स्वांग मा दुःख प्रदर्शन लचकण से कर्दी छै अर जब सासू ब्वारी की बड़ैं करदी छै त ब्वारी इन हिटदी छै जन बुल्या क्वी बाछी कुतकणी होवु। हमर गौं की जनान्यूं ल अलग-अलग रस-भावुं का वास्ता इन बिम्ब खुजेन कि पढ़्यां-लिख्यां नाटककर्मी खौळे जाला कि यूं अनपढ़ जनान्यूं तैं कैन सिखे होलु कि नाटकुं मा अनुभव तैं हिटण पोड़द। नाटकुं मा श्रव्यता अर दृष्यता को मिलाप होण चयांद, हमारी बादी अर गढ़वाळै जनानी नाटक का ये मुख्य अंग तैं

भली भाँति जाणदा छया।

जौंन बाद्यूं स्वांग देखी होल वू जाणदा छन कि कथगा इ दैं अपण स्वांगूं मा बाढी गौड़, त बादी रिक़, बाग दिखांदा छया (मनिखौं तैं कपड़ा पैरैक) त बाजिदा मनिख बण्यां जानवंरू से अभिनय करांदा छा। मिन एक बाद्यूं हास्यात्मक स्वांग देख छौ जखमा हंसी-हंसी मां इन दिखये ग्ये कि हौळ ब्यूंत से लगाण चयांद ना कि बल्दूं तैं चूटी-चाटिक हौळ लगाण चयांद। वु ठीक च बाद्यूं स्वांग या जनान्यूं कृत स्वांगू मा स्थान सत्यता या जात्रा की गतिशीलता नि होंदी छै पण चूंकि विषय सामयिक या जण्यां पछण्या होंद छा त स्थान विभिन्नता अर गति अन्तर तैं गौं का दर्शक अफि बींगि जांदा छा। दर्शक, विषय अर अभिनय असल मा स्वांगु एकी अंग होंदा छा।

सुकरात को २३०० साल पैलौ रचित पोयटिक्स मा समय एकता या स्थान एकता या भरत को नाट्य शास्त्र (१५०० बी.सी.) मा समय एकता, स्थान एकता या वर्ग एकता की जु शिक्षा च वा बाद्यूं गढ़वाळै जनान्यूं लोक नाटकूं मा स्वतः मिल्दी छै। श्रुति व्यवस्था अर अनुभवुं से ही बादी या गढ़वाळै जनानी स्थान एकता, समय एकता या वर्ग एकता या वर्ग भिन्नता विषय मा सिद्धहस्त छयी। मिन बल्दौ स्वांग देखी छौ उखमा बादी की एक्टिंग से लगदो छौ कि हौळ लगांद दैं पौड़ ए गे या कवी हौळ कै डाळौं जलड़ पुटुक फंसी ग्ये। बातचीत अर ऐक्टिंग से समय, जगा अर जाति भेद दिखये जांद छौ।

करतबूं से भाव व्याख्या :- श्रुतिमूलक या पठनीय साहित्य मा मजा ल्हीण बान या त सुणण पोड़द या पढ़ण पोड़द इखमा मजा (आनंद) को स्रोत क्वी कर्तब नि हौंदू। जन कि गितांग को गाण- गीत अर किताब को शब्द विन्यास महत्वपूर्ण होंदन पण स्वांग मा एक्टरूं की एक्टिंग या करतब महत्वपूर्ण होंद। मुखाभिनय ही ना शारीरिक अभिनय बि स्वांगूं मा महत्वपूर्ण होंद भरत का हिसाब से नाटक दृश्यकाव्य च याने कि स्वांग मा हरकतू से ही रससंपादन अर भावसंपादन ह्वे सकद अर गढ़वाळ का बादी या भरत की चेली जनानी स्वांगकार यी जाणदा छा।

मी तैं एक लोकनाटक याद आंद, जै स्वांग को विषय छौ सासू का भौं भौं नखर्याट, ये स्वांग की रचना हमारा गौं की जनान्यूंन ही करी छै। इखमा इन दिखये ग्ये छौ कि जब ब्वारी मैत बटे ससुरास आंदी त सासू रूसयीं होउ त वा सास गणगणी आवाज मा बोल्दी छै ऐ गे तू अपण ब्वे बुबौं गौड़ुयूं निफल्टी लगैक अर सासू मुख फेरी दींदी छै। त इन मा ब्वारी पैथर बटे इन सिवा लगांद छै कि सासू पैथरा तरफां धोति थोड़ा अळग चौड़ि जा (ज्यां से सासू तैं पता चल जाउ कि ब्वारी न सिवा लगाई) अर सासू तणेक फुण्ड सरकी जांदी छै।

अर ये ही स्वांग मा जब सासू ब्वारी मा सैरी (मित्रता या प्यार) होवु अर तब ब्वारी पैली सासू का खुट मा हाथ ध ारदी छै, फिर घुंड तैं छूंदी छै अर पैथर अपण हत्थ मुंड मा ल्हिजैक सिवा लगांदी छै त सासू ब्वारिक भुक्की (होंठ, नाक अर कपाळ) पींदी छै फिर बोल्दी छै। सदा स्वागबंती रै, नौ नौ नौन्याळुं ब्वे बणि। गीतूं बगत पर यो जरोरी नि होंद कि जूनी उज्यळ हे ही या लालटेन को उज्यळ कामगार उज्यळ होवु त गौं की जनानी मुखाभिनय से जादा शारीरिक अभिनय भौं भौं बिम्बूं की सहायता से स्वांग करदा छा। दृश्य काव्यावली की सल्लि छयी मेरी गौं की वु जनानी जु गीतू बगत पर स्वांग भरदा छा (अब मिन सूण स्वांग नि होंदा अब टी. वी. फिलम चल्दन- ए बगत पर)।

गढ़वाळी स्वांगू मा पलौट :- नाटकु मा कथा अर प्लौट की बड़ी महत्ता होंद। पलौट मा घटना घटित होंदन, घटनौं मा रससंपादन होंदन, हरेक घटना कु संबंध अगवाड़ी-पिछवाडी सब्बि घटनौं से होण जरोरी च। यू संबंघ जु स्वांग की घटनौं तैं जुड़दो, यू संबंध स्वांगकार का वास्ता एक संवेदनशील छ। यु संबंघ दर्शकु मा आकर्षण बि पैदा कौर सकद। स्वांग रचण याने आकर्षण की बुणावट करण। स्वांगौ कथाविन्यास की साम्यता म्वाळ से करे जै सक्यांद म्वाळौ दुंळ स्वांग की घटना छन त स्योळौ डुण्ड स्वांग की घटनौं तैं जुड़ण वळा संबंध छन।

मिन जखमोलौं गौं मित्रग्राम मल्ला मा बाद्यूं एक स्वांग देखी छौ जै तैं मि नाम दीणु छौं। हम सबि त चोर छवां। ये स्वांग की कथा अर पलौट सरल च इखमा एक मुंडीत मा एकाक ड्यारम दुंळदार तामौ पैसौं माळा चोरी ह्वे जांद। एक नौ दस सालौ छ्वारा चोर कु पता लगाण चांदो अर इन मा वै तैं पता चल्द कि वेका मुंडीत मा सबि कै ना कै रूप मा चोर

छन इख तलक कि वेकी बैणि, ब्वे , बुबा अर दादा बि चोर छन। पलौट दिखण मा सरल च पण नाटकीकरण का हिसाब से कॉम्प्लेक्स पलौट च। ये स्वांग मा बादी न गीत, जागर, बड़ा मांगण वळा गीत (प्रशंसात्मक) गप्पबाजी आदि विधाओं को सहारा ले छौ। कठिनता मा काव्यात्मकता ल्हैये ग्ये छै। कदम-२ पर आश्चर्य (ज्यांकी आशा कत्तै नि छै अर वो ही ह्वे) दिखण से ये स्वांग मा आखिरै तलक आकर्षण छौ। ये स्वांग मा नौनु कुछ नि करदू बस वु दिखद च अर बकै चरित्र चुरयीं चीजुं तैं लुकाणौ प्रयत्न करदन।

उन त जादातर बादी हास्यप्रधान स्वांग रचदा छया कारण इन स्वांगु की ही मांग रै होलि पण बादी ट्रेजिडी बि जाणदा छा। एक दैं मिन एक स्वांग देखि जख्मा एक जनानी रतौंध ाी की रोग ह्वेगे, पैल पैल वा जनानी ये रोग तैं लुकाणि राई अर लोगूं समणि इन अभिनय करणी राई जनबुल्यां वा सौब दिखणी होवु (इख मा हास्य अर व्यंग्य उत्पति ह्वे) त जब हौर लोगुं तैं पता चलि त लोग वीं जनानी दगड़ मजाक करण बिसे गेन। जनकि वा जनानी कपिलु खाणि होवु अर हैंकी जनानी कपिलौ कढ़ै जगा पींडौ कढ़ै धौरि द्यावों त रतौंधी वळी जनानी बरड़ाउ "हैं खीरा पत्ता कनैं तिमलौ लाब ह्वेन", हालांकि लोक हंसदा छा पण छै ट्रेजिडी अर तब आखिरै एक जनानी ज्वा यीं रतौंधी वळी जनानी का दगड़ जादा ही मजाक करदी छै वीं तैं बि रतौंधी ह्वे ग्ये । ये लोक नाटक तैं मि ट्रेजिक प्ले बुलदु। पैला अंक मा जब या जनानी अपणो रोग लुकांदी त पधान तैं पधान का ही समणि व्यंग्यात्मक रूप मा गाळि़ दींदी, असल मा या रतौंधी वळी जनानी समजदी कि यू बैख वींको द्यूर चं, हास्य व्यंगय अर त्रासदी को संगम छौ यु लोकनाटक। अब त मि कथगा इ डायलौग अर घटना बिसरी ग्यों निथर यीं थीम पर एक भौत बढ़िया नाटक मंचित ह्वे सकद। बाद्यूं काम पणा ठाकुरूं तैं आनंद दीणौं काम छौ त शिक्षाप्रद विषयुं से जादा वु मनोरंजनात्मक स्वांग रचदा छया पण कुदरती तौर पर हरेक स्वांग मा सामाजिक शिक्षा ऐ जांदी छै।

मैं तैं एक पलौट याद आंद जखमा एक नौनु बी.ए. पास कौरिक गौं आंद त तैका ब्वाडा, बुबा, काका वेका ह्वाड़ा बणदन अर डायलॉग छा पढयां-लिख्यां नौनु अब त अपण बुबौं तैं घ्वाड़ा ही समझदन।

एक बात मिन देखी कि गढ़वाळि लोक नाटकुं मा लम्बा डायलॉग नि होंदा छा जनकि मैदानुं मा नौंटकी का स्वांगू मा मिन देखी छौ। बाद्यूं स्वांग ह्वावन या जनान्यूं रचित स्वांग डायलॉग छ्वटा ही होंदा छा। मिन गढ़वाळी स्वांगु मा पलौट सरल ही देखिन।

गढ़वाळी लोक नाटकुं मा अंक विधान :- भारत कु नाट्यशास्त्र होवु या सुकरात को नाट्य शास्त्र होवु या आधुनिक नाट्यशास्त्र होवन सब्यूं मा अंक विधान का बारा मा बतये ग्ये। भरत का नाट्य शास्त्र मा त सैकडौं श्लोक अंकविधान पर ही छन। चूंकि गढ़वाळी का नाटक स्टेजविहीन होंदा छा त मि बोलि सकुद कि गढ़वाली लोकनाटक अंकहीन ही होंदा छा-जगा, समय, को जु भेद होंद छौ वु लोक स्वतः ही समजी जांदा छा। अंक भेद से जगा अर समय भेदा नि होंद छौ बल्कण मा लोगुं की स्वतः समझ से अंक भेद पैदा होंद छौ । कुछ डायलॉग, एक्टरूं का शारीरिक हावभाव, सांस लीणौ तरीका आदि से अंक भेद को काम कर्दा छा। कबि कबि अंक भेद तैं गढ़वाळी नाटकुं मा गैरजरोरी भि माने जांद छौ। मि अंकभेदु तैं चलनशील अंक भेद नाम दीण चांदु। एक स्वांग की याद आंदी जै तैं मिन अपण गौं मा देखी छौ। ये स्वांग तैं मि नाम दीण चांदो ''तीनु कजे कखि जुगा नि राई'' इखमा एक बैखा (प्रौढ़) तीन ब्यौ छा। बेखौ नाम छौ दशरथ अर वेकी तीन कज्याण्यूं नाम छया कौंशिला, सुमिंतरा अर कैकयी। अर यूं तिन्यूं बीच मा दशरथ कन मार, लात, गाळी खांदो यो दिखये गे छौ। इखमा अंक भेद बड़ा सरल तरां से ह्वे। एक अंक को मंचन चौक का छ्वाड़ पर, हैंको अंक दैं तरफ, तीसरो अंक चौक का हैंका छ्वाड पर अर चौथौ अंक पैल वक्ती जगा पर ह्वे। भरत को नाट्यशास्त्र तैं नये जामा दीण यांको बुल्दन। भरत को नाटयशास्त्र सुविध ाासंपन नाटयकर्म्यू वास्ता रचित ह्वे छौ पण गढ़वाळी लोक जन अर बादी निछौंदी छा त स्वांगूं अंक भेद मा बिगळी बिगळी कौंळ अपणये गेन। अच्काल एम्योचर या प्रयोगिक नाटकुं मा या विधि अपणये जांद। छबीलदास हॉल दादर मुम्बई मा प्रयोगिक नाटकु मा जु अंक भेद होंद उनी तरां से हमारा लोकनाट्यकर्मी (बादी अर जनानी) अंक भेद करदा छा।

अंक भेद समजण मा दर्शक होशियार ही होंदा छा चूंकि दर्शक आनंद लालाक्षी छया त आलोचक या सरोता दृष्टि का

नि होण से अंक भेद मा यदि त्रुटि होंदी बि छै त वा त्रुटि क्षमीय छै। बाद्यूं स्वांग मा अंक भेद पाये जांदो छौ पण जनान्यूं रचित स्वांगू मा वैज्ञानिक अंक भेद ना का बरोबर छौ पण दर्शक जाणि जांदा छा कि नाटक (स्वांग) मा अंक भेद ऐ ग्ये। लोक जीवन की या ही त खूबी च जु संसाधनु हिसाब से कै बि चीजुं तैं परखणे आंखि रखदन।

कबि कबि बादी सूत्रधारी रूप मा समय, जगा अर वर्ग की इत्तला दींदा छा अर अंक विधान का नियम पूरा करदा छा। जखम जन जरोरत, तै हिसाब से काम चल्दु छौ।

एक स्वांग की मैं तैं याद आंदी इखमा बादी विषय से संबंधित गीत लगैक अंक विधान की जरोरत पूरी करदा छा।

जख तलक जनान्यूं रचित स्वांगूं सवाल च इखमा पता नी कनकैक यी जनानी कंटिनुअटि लांदा छा कि अंक भेद की उन जरोरत ही नि होंदी छै जन कि विद्वान बात करदन। शास्त्रीयता का हिसाब से अंकभेद नि होंद छौ पण दर्शक बि अंक भेद मा शामिल होंदा छा। जनकि स्वांगकार एक स्थिति से दुसरी स्थिति मा जावन त दर्शक (जनानी) बोलि द्यावन ले सि अब घार मा ऐ गेन या गदन या रूस्वड़ मा ऐ गेन दर्शक ही जगा, समौ अर वर्ग भेद की बात बतांदा छा अर लोकनाटकुं की या बि एक खाशियत च। असल मा जनानी वो ही नाटक खिलदा छा जु गौ वाळुन अनुभव (दिख्यूं) होवु या जु स्वांग कतगा ही साख्यूं से चलणु होवु जनकि 'छमिया बुड्या' या "तै बुड्या की लंबी दाड़ि, तै बुडया जाणु ना" जन लोकगीत पर आधारित स्वांग, हम इन बि बोलि सकदवां कि दर्शक सूत्रधार का काम बि करदा छया अर अंकविधान मा शामिल होंदा छा।

जादातर स्वांग छ्वट -२ होंदा छा त हम बोलि सकदवां कि एकांकी स्वांग होंदा छा अर जु लम्बा स्वांग होंदा छा उखमा अंकविध ाान मा स्वांगकार, दर्शक, दर्शकु की समज शामिल होंदी छै।

स्वांगकार कथा कखन लांदा छा :- मिन जै जमाना मा जनान्यूं या बाद्यूं स्वांग देखी छौ (१९६७से पैली) वे जमाना मा क्या बादी क्या जनानी जादातर अनपढ़ ही छया। कैन बि कालीदास, जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश या सेक्सपियर का नाटक नि बांची छा। अर यी लोक नाटक खिल्दा छा अर नाटकूं मा कथा बि होंदी छै। जादातर कथा या त साख्यूं से चलण वळी नाटिकाऊं (गीतेय) वळी होंदी छै या समाज से उठयीं घटनौं पर आधारित होंदा छा।

जनान्यूं का स्वांग मा जादातर जनान्यूं से संबंधित कथा होंदी छै। कबि कब्यार न्याड़ ध्यारौ लोगुं की मजाक करे जांदी छै, या क्वी खास आदिमै या मनिख्याणीक मिमिक्री बि मिन देखिन, यूंकी कथौं मा समाज ही होंद छौ कल्पनातीत कथौं की जगा नि छै।

ठीक च बादी अतिशयोक्तिपूर्ण हिसाब से नाटकूं मा नाटकीयता ल्हांदा छा पण मूल कथा समाज से ही ल्हांदा छा। कल्पना सिर्फ नाटकीयता ल्हाणै वास्ता प्रयोग होंदी छै। विषय वस्तु गौं की होंदी छै अर कत्ति दैं की दर्शक नाराज भि होंदु छौ कि बाद्यूं न वेको ठट्टा लगै दे । रियलिज्म कथाओं मा साफ झळकदो छौ।

यो ठीक च कि बादी सामान्य कथाऔं तैं ही मंचित करदा छा पण यूं कथाऔं थैं नाटकीयता दीणौ वास्ता असामान्य पलौट बणादा छा। जादातर बुडड़ी अपणी ब्वार्यू तैं नौनु-नौन्याळ पाळण ौ कौंळ सिखांदन अर इख पर क्वी नाटक खिले बि जावु त वु नाटक मजेदार नि ह्वे सकद। पण जब क्वी रंडवा बुड्या यो ही शिक्षा अपणी ब्वायूं तैं द्यो त पलौट असामान्य ह्वे जांद। मिन एक बाद्यूं-स्वांग देख छौ जखमा पात्र छया एक रंड्वा बुड्या द्वी ब्वारी अर वु दुयुंका दुधी का बच्चा, जगा गौं से भैर एक इकुळ्या कूड़ अब यू बुड्या कै तरा से अपण ब्वार्यूं तैं कौंळ सिखांद इख तलक कि माहवारी का वास्ता वु बुड्या मोटी लंगोट बणौकी ब्वार्यूं तैं दींदो। एक डायलॉग छौं।

बुड्या (ब्वारी तरफ पीठ कौरिक) ए ब्वारी पूसौ मैना च, नौनु तैं ढकीक दूध पिलावो, दूध्यूं पर ठंड लगी जालो त नाती तैं अखळ बि लगी सकदन सामान्यता तैं असमान्यता को रंग दीण बाद्यूं तैं आंदो छौ। ये स्वांग मा डायलॉग समाज का ही छा पण बुडड़ी का जगा बुड्या से वी डायलॉग बुलये गेन त स्वांग मा स्वतः नाटकीयता ऐ ग्ये। ये ही स्वांग मा बुड्या एक ब्वारी तैं हैंकी ब्वारी क तैल मालिश की सला दींदो ब्वारी तेल मालिश करद दैं शरमाण नि चयांद चाहे क्वी बि जगा (अंग) होवु इखमा 'जगा' बुल्द दैं स्वांगकार (बादी) जोर से उच्चारण करदो अर ये ही उच्चारण से नाटक मा नाटकीयता

आइ छै। कथा टैं पलौटीकरण अर पलौटीकरण को नाटकीकरण मा बादी सिद्धहस्त छया।

कत्ति पलौट इन होंदा छा जुकि भौत ही सामयिक होंदा छा या अड्गैं या गौं तक ही सीमित छया। हमर अड्गैं मा एक बौंडर्या ओड ब्वाडा छया त एक रात गौं की जनान्यूंन एक मुक स्वांग रच जै मा बौंडर्या ओड की नकल छै जनकि पाणि पीण, चर्णामिर्त पीण आदि आदि अर ये स्वांग कु मजा सिर्फ वी ले सकद छा जु बौंडर्या ओड टैं जाणदा छया वो ओड ब्वाडा पाणि बि बैं हात्थन बर्तद छया अर खाणक बि बैं हात्थन खांद छया।

सदाबहार पलौट असल मा गीत गद्य मिळ्वाकी स्वांग होंद छा जन कि प्रेम कथा, बेटीक अषाढ़ या पूसौ मैना मैत नि आण, सोत्या कलह, अत्याचारी सास या ससुरा या क्वी बि नाटक दुखांत होवु या सुखांत यां पर कम ही जोर होंद छौ। जख तलक दुखांत स्वांगुं सवाल च जादातर दुःख जनान्यूं जोग आंदो छौ।

लोकनाटकुं मा चरित्र चित्रण :- चूंकि जादातर नाटकुं कथा, कथ्य, पलौट, समाज बटे उठये जादा छा त कै बि चरित्र का विकास मा देरी नि होंदी छै। मैं इन लगद चरित्र विकास का मामला मा स्वांगकार अपण दर्शकूं की समज पर पूरा भर्वस करदा छया। या दर्शकूं टैं वो इ चरित्र दिखये जांदा रै होला जौं टैं दर्शक भली-भाँति परिचित रौंदा छा।

चरित्र विकास या चरित्र चित्रण को सबसे बढ़िया तरीका छौ विशेषण, अलंकार अर बिंबूं को प्रयोग। चरित्र कु कर्मू से जादा डायलौंगु से चरित्र चित्रण करे जांदो छौ जनकि रेडिओ नाटकुं मा या पद्धति अपणये जांद। चूंकि मेकअप अर मंच को वातावरण ना को बराबर ही छौ त डायलॉग ही चरित्र विकास या चरित्र चित्रण का काम करदा छा। कबि कबि त कलाकार ही अपण चरित्रो बखान करी दींदो छौ निथर एक एक्टर हैंका एक्टर को चरित्र टैं चरित्रित बि करी सकुद छौ।

चूंकि लाउडनेश जादा होंदी छै त चरित्रूं टैं दर्शक जल्दि समज जांदा छया।

जादातर स्वांगू मा चरित्र कथानक पर भारी पड़दा छा (जु स्वांग मिन देखिन) जनकि छमिया बुड्या गीतेय अर गद्यात्मक नाटक च इखमा छमिया को क्रूर रूप ढ़ग ढ़ाळ कथा से जादा भाषित होंद द्याख मिन। ये एक सत्य घटना पर आध ाारित जनान्यूं कृत स्वांग मा कथा से जादा एक चरित्र पर ध्यान दिए ग्ये छौ। ये स्वांग मा एक जनानी एक गैर मर्द का दगड़ फंसी ग्ये अर बदनाम ह्वे ग्ये त कथा से जादा त वी जनानी टैं फांस खाण या हैंको तिसरो मरद का दगड़ भाजि जाण चयांद पर ध्यान दिये गे छौ यी जनानी का दगड़ संवाद बक्या (पुछेर) करदो। कुछ हद तलक संघर्ष संशय की स्थिति को चरित्र चित्रण मिन द्याख ये स्वांग मा।

वार्तालाप से भी चरित्रू विकास करे जांद छौ। जनकि गुस्सा मा या संत ह्वेकी ब्वारी सासु खुणि बुल्दी भैर वाळु खुणि त तुम सिरप्वळ जन चिपळ बणी जांदवा अर मैं खुणि खदुळ कुत्ता । वार्तालाप कु यु डायलॉग सासु क द्विचरित्र टैं चरित्रित करण मा सक्षम छौ।

स्वांग मा अंतरव्यथा या अंतरकथा सुणण या सुणान से भी चरित्रो विकास करे जांद छौं फिर चाल, ढाल, करतब, कबि कबि बोलि भेद (मतलब चरित्र कैं अडगैं कु छ), उठण, बैठण से भि कलाकार कु चरित्र दिखये जांद छौ। जन कि मिन एक बाद्यूं स्वांग मा बड़ि जातिक बामण अर छ्वटि जातिक बामण मा भेद द्याख कि बड़ो बामण हुक्का पींद पण छ्वटि जातिक बामण टैं चिलम दींदो, बड़ी जातिक बामणौ कपाळ पर तीन सफेद लकीर छै त छ्वटी जातिक बामण क कपाळ पर सिरफ लाल पिठै छै। ये इ स्वांग मा बड़ी जातिक बामण बार बार अपण जंद्यौ दिखांद। बाद्यूंन यो बामणु मा भेद दिख्यूं ही छौ त बड़ी तरकीब से द्वी जाति भेद कु चरित्र चित्रण यी तरैं से दिखये ग्ये।

तकरीबन सब्बि भाषाओं का व्यंग्यकारूंन मुर्दा टैं सांक पर लिजांद दैं क्या क्या कार्यकलाप होंदन यां पर ल्याख एक बादीक स्वांग मिन बचपन मा ही देख आली छौ। ये स्वांग मा मुड़ैयुं ध्यान मुर्दा से जादा "गौड़ि-बखयूं खरीद फरोक्त या कैकी जवान नौनीक ब्यौ कख होण चयांद" पर ही दिखये ग्ये छौ। आठ या बारा मिनटौ स्वांग छौ पण मैं टैं अबि बि याद च। कथा कुछ नि छै बस कलाकार छवीं लगाणा रैन।

चरित्रौ स्वभाव हाव भाव (शारीरिक अभिनय) से :- बाद्यूं या जनान्यूं स्वांग मा चरित्रुं स्वभाव मुख से कम ही बतये जांद छौ कारण द्वी इ लोकनाटकुं मा प्रकाश व्यवस्था अपूर्ण ही होंदी छै त शारीरिक भाषा अर डायलॉग ही चरित्र को चरित्रिकरण मा कामयाबी का हथियार होंदा छा। डायलॉग ही त गढ़वाली लोकनाटंकु जान छै। लोकनाटक चाहे बादी खिल्दा छया या जनानी, द्वी जगा प्रकाश व्यवस्था की कमी छै त नाटकीयता लाणौ बान डायलॉग अर डायलॉग डिलीवरी ही नाटक का केंद्र होंदा छा। किरदार असल मा डायलॉग का किर्दार छया।बातचीत या वार्तालाप शैली मा ही नाटक खिले जांदा छा।

हालांकि डायलॉग ढांगू भाषा का हि होंदा छा पण बादी कबि कबि क्षेत्रीय भिन्नता दिखाणा बान वीं खास अडगैं की भाषा तैं भी इस्तेमाल करदा छया डायलॉगुं मा अतिनाटकीयता होण जरोरी छै क्वी बात समजाण बिंगाण होवु त डायलॉग लम्बा बि होंदा छया निथर आम डायलॉग इन लगदा छा जन आम वार्तालाप होवु। चरित्रौ अनुरूप ही डायलॉग होंदा छा।

वार्तालाप मा कलाकारूं का डायलॉगुं मा अंतर दिख्यांद छौ अर बादी जाणदा छा कि डायलॉग अंतर से नाटकीयता आंद, रियलिटी अर काल्पनिकता का पुट डायलौगु मा होंद छा डायलॉग अर वार्तालाप इन छया कि जादातर बाद्यूं नाटकुं तैं लिखण कठिण ही च। चूंकि यि नाटक अड्गैं पर जादा आधारित छया त यूं नाटकूं तै लिखे बि जावु त समजण कठिन ही ह्वे जांद।

गीत अर गद्यात्मक नाटक : - जनान्यूं द्वारा गीतु बगत पर खिले जाण वळा स्वांग गीत अर गद्य का मिळ्वाक होंदा छा। बादी बि भौत सा नाटकूं मा गीत गांदा छा

नाटकूं का प्रकार :- गढ़वाली लोकनाटकूं का भेद हम कथगा ही तरां से कर सकदवां पण रस या विषय तैं आधार बणैक ही नाटकूं मा भेद करण ठीक रालो।

दुख दर्शांदा नाटक :- जनान्यूं द्वारा खिले जाण वळा स्वांग जादातर जनान्यूं पर होण वळा अत्याचार दिखांदा छया इखमा बि सासू का ब्वारी पर अत्याचार पर स्वांग जादा होंदा छा।

जनान्यूं पर समाज अर कौटम्बिक अत्याचार या अनाचार वळा विषय भि जनान्यूं स्वांग मा होंदा छा।

एक दैं मैं तैं याद च कुछ जनानी पंचैती चौक से दूर एक हौरू चौक मा 'सती' का स्वांग खिलणा छया अर उना बच्चौं तैं आणौ मनाई छै। मिन लुक्कीक वु स्वांग द्याख जखमा सत्ती कन सत्ती होंद दिखये ग्ये छौ। हमर गौं (ग्वील जसपुर ढ़ांगु) मा हमारी एक ददि सती ह्वे छै वे विषय पर ही यू स्वांग छौ। स्वांग का क्वी दर्शक नि छया, सबि जनानी स्वांगकर्ता छया। जब सती सती होंद त सबि जनानी रूणा छया

बादी दुःखांत नाटक से दूर ही रौंदा छया।

श्रृंगारिक लोक नाटक :- गीतेय लोकनाटकूं मा श्रृंगारिक गीतुं भरमार होंदी छै। चूंकि म्यार विषय गद्यात्मक लोकनाटकूं पर च त भि गीतेय लोकनाटकू पर नि लिखणु छौं ।

गढ़वाली नाटकूं मा श्रृगांरिक शब्द जादातर विशेषण होंदा छा, बादी कबि कबि बिचकीं छ्वीं पर बि चली जांदा छया एक स्वांग देखी छौ जैं तैं मि नाम दीणु छौं "बिचक्यूं", उखमा एक डायलॉग च अर बादी एक बुड्या खुणी बुल्दु क्या गलादार काका! पैल तू कलोड्यूं गलादार छौ अब नौन्यूं गलादार.....।बिगरैली, बांद, गल्वड़, चाल जन शब्द से ही श्रृंगारिता प्रदर्शित होंदी छै।

वीभत्स या घीण पैदा करण वला नाटक :- अब गढ़वाली लोकनाटकूं संग्रह करण कठिण च किलै कि म्यार हिसाब से अब बादी बि नि रै गेन अर ठाकुर बि नि रै गेन जु ये साहित्य मा रूचि ल्यावन खैर हाँ त बाद्यूं नाटकूं मा घीण बि होंदी छै, अर बादी कोशिश कर्दा छया कि घीण से घीण कम हास्य रस मा दर्शक ल्हये जावन घीण अर हंसदारी को मिल्वाक बड़ा मजा अर सरलता से होंदो छौं, जरा द्योखो-

(अ) एक मरद (झाड़ा बैठ्यूं) ह्मार मैं लगणू अब मेरी तागत खतम ह्वे ग्ये।

(ब) हैंको मरद (वू बि झाड़ा बैठ्यूं छ) कनो क्या ह्वे?

(अ) भई पैलो मि बळिंड जन झाड़ा करदो छौ

(ब) अर अब?

(अ) अब त झाड़ा चिमनी जन होंद।

(ब) मेरी बि दशा खराब चलणी च, पैल लिंडरी आंदी छै अब बकरोळ हगणू छौं।

बांचण-पढ़ण मा घीण लगली पण जब बाद्यूं न स्वांग करी छौ त दर्शक हंसदा ही रै गैन।

घीण मा घीण ही होंदी छै। मैं तैं याद नि आंद कि मिन कै लोक नाटक मा मार काट या खून खराबा का प्रतीक देखी होलु, खून खराबा का वीभत्सपूर्ण रस की शायद दर्शकूं तैं जरोरत ही नि रै होलि।

लोकनाटकूं मा हास्य रस- बाद्यूं नाटकूं मा जादातर हास्य रस की ही भरमार होंदी छै। बकै रस त श्रमिक काम मा गौं वळूं तैं मिल्दा ही छा त शायद यो ही कारण राइ कि बाद्यूं नाटकूं मा हास्य रस जादा ही मिल्दो छौ।

हास्य रस गल्ती से, हावभाव, स्थितियूं मा अनगढ़पन, चरित्र विन्यासू से या अन्य तरां से पैदा करे जांदो छौ, एक उदाहरण सटीक रालुः-

स्थान (अयेड़ी खिलण वळा एक मृग पकड़णै कोशिश) एक शिकारी (भौत जोर की आवाज मा) ये क्वी बि शिकर्या घ्याळ नि कौरिन। भारे घ्याळ नि कौरिन ।

दगड़या शिकारी (हौर बि जोर से) हां हां हमन बींगि याल। घ्याल नि करण घ्याळ नि करण

(इथगा मा मृग भाजि जांदो)

स्वांगू मा गुस्सा-रोष :- जनान्यूं या बाद्यूं नाटकूं मा गुस्सा या रोष बि होंद छौ। डायलौगुं का अलावा हाव भाव मुंड झमडाण लत्याण, मुण्क्याण, दांत किटण जन शारीरिक अभिनय से गुस्सा रोष रस पैदा करये जांद छौ।

बीरताः संपूर्ण वीर रस से भरपूर नाटक मिन त नि द्याख पण बीच बीच म वीरतापूर्ण क्रियाकलाप मिन बाद्यूं नाटकूं मा अवश्य द्याख।

भय, डौर-भौ :- जनान्यूं नाटकूं मा यू जादा ही होंद छौ, सासू डौर, बागौ डौर आदि सामान्य डौराण्या दृश्य होंदा छा। बीच बीच मा झस्काण जन क्रियाकलाप बि सामान्य छा।

भूत पिचाश भगौणौ दृश्य मा बि भय अर परलौकिक रस की उत्पति होंदी छै।

वात्सल्य रस :- जनान्यू स्वांगू मा दूधि पिलाण या ब्वे कु पचास सालौ नैनु तैं चमताळ से अड़ाण वळा दृश्य मिन देखिन। ब्वे कु अपण नौना कु सींप फुजण वळा दृश्य भि म्यार जनान्यूं स्वांग मा दिख्यां छन।

सिखाण वळा नाटक अर समस्या मूलक स्वांग :- निखालिस सीख दीण वळा स्वांग त नि देखिन पण बीच बीच मा भौत सा सीख दीण वळा स्वांग होंदा छा। उन यूं स्वांगू का उद्देश्य समस्या मूलक ही हूंदो छयो।

स्वांगू मा सूत्रधार :- बाद्यूं नाटकूं मा सूत्रधारी कला छै पण जनान्यूं नाटकूं मा सूत्रधारूं जरोरत नी होंदी छै किलैकि यि नाटक ट्रेडिशनल नाटक होंदा छा अर नाटक दिखण से पैली सब्यूं तैं पता होंद छौ कि विषय क्या च ।

मंच व्यवस्था :- गढ़वाळी लोक नाटकुं मा मंच व्यवस्था की क्वी खास शैली नि होंदी छै। जनता का बीच खाली जगा ही मंच होंद छौ। समय, स्थान अर वर्ग की सूचना सूत्रधार ही दींदो छौ।

मेकअप :- मेकअप उन आज को हिसाब से नी होंद छौ पण कलाकारूं को पहनावा मा कखि ना कखि ध्यान अवश्य दिये जांदो छौ।

छमिया कपड़ौ से मेकअप आदि होंद छौ जनकि छमिया बुड्यौ गौळगांड झुल्ला की दिण्डी से बणदी छै। या छमिया का सींग का वास्ता कठग प्रयोग मा आंदा छया।

कलाकारूं ट्रेनिंग :- जख जलक बाद्यूं सवाल च बादी -बादण या वूंका परिवार वळा ट्रेंड ही होदा छा गौं मा जरोरात का हिसाब

दीवाली की शुभकामनौ

दगड़

कोठारी सैनेट्री वर्क्स

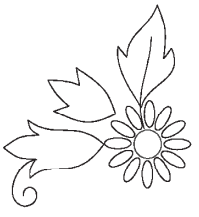

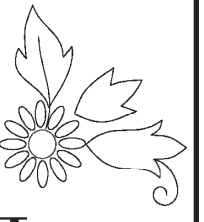

लाडपुर, रायपुर रोड़, देहरादून

ईगास – बग्वाळ की शुभकामनाओं का दगड़

पंवार स्वीट्स ॉप

लाडपुर, रायपुर रोड़, देहरादून

–बरात, पार्टी मा कैटरिंग का खास व्यवस्था

छ्वीं-बत्त

ग्लोबलाइजेशन का दौर मा आंचलिकता

✍ आशीष सुन्दरियाल

ग्लोबलाइजेशन का युग मा जब कि हरेक आदिम केबल अर इन्टरनेट जना संचार माध्यमों से सीधा सम्पूर्ण विश्व का सम्पर्क मा छ इन मा आंचलिकता अर आंचलिक भाषा साहित्य का समणि अपणा अस्तित्व तैं बचाणै भौत बड़ि चुनौती खड़ि छ।

भले व्यवसायिकता अर बाजारवाद का दौर मा ग्लोबलाइजेशन से आंचलिकता भारी प्रभावित होणी छ पर ग्लोबलाइजेशन बनाम आंचलिकता की बात भि ठिक नी छ। हाँ ! इतना जरूर छ कि आंचलिक भाषा, साहित्य, समाज अर संस्कृति तै मजबूत बणाणा वास्ता हमतैं कुछ खास जतन अवश्य कर्ण प्वाड़ला।

इन बात नी छ कि संचार क्रान्ति से आंचलिक भाषा-साहित्य अर समाज तैं नुकसान हि उठाण प्वड़णू हो, यांको एक सकारात्मक पहलू यो भि छ कि अगर सोचि समझि कै काम करे जावा त हमरो एक छ्वटो सि प्रयास भि हमारि आंचलिक विशिष्टता तै विश्व पटल पर पहचाण दिलै सकद। हम भि यूं संचार माध्यमों को प्रयोग अपणा भाषा-साहित्य अर संस्कृति का प्रचार-प्रसार का वास्ता करि सकदां अर सिरप अपणा समाज मा हि ना बल्कि हौरि लोगुं का बीच भि अपणा भाषा-साहित्य तै लोकप्रिय बणै सकदां। हाँ ! यांका वास्ता यो जरूरी छ कि हमारा साहित्य की विषयवस्तु सार्वभौमिक अर सृजनशीलता को स्तर उच्चकोटि को हो ताकि विश्व स्तर पर यांकी कद्र हो।

जख तक गढ़वाळि भाषा- साहित्य, समाज अर संस्कृति को सवाल छ त आज हम विकास का सबसे अहम् दौर से गुजरणा छाँ, राज्य बणणा बाद लोगुं मा कुछ उत्साह त दिखे छ पर क्वी ठोस काम अबि तक नि ह्वे, नेम अर फेम का गेम मा सब्बि उलझि कै रै गिन।

आज भाषा-साहित्य समाज अर संस्कृति का सम्वर्द्धन अर संरक्षण का वास्ता सबसे जरूरी छ नई छ्वाळी को अपणी भाषा अर अपणा साहित्य का प्रति रूझान-यांका वास्ता जरूरत सिरप इतना छ कि अपणी भाषा साहित्य अर समाज की वो तस्वीर नै छ्वाळी का समणि प्रस्तुत हो कि वू तै भि लगे कि हाँ यामा कुछ खास बात छ अर वूंमा भि अपणा भाषा -साहित्य समाज अर संस्कृति का वास्ता कुछ कर्ने इच्छा जागृत हो अर वो अपणी पौराणिक परम्पराओं अर गौरवशाली अतीत से जुड़िक अपणा समाज का वास्ता स्वा. भिमान का साथ काम करीन्।

पर हमरा यख त सब कुछ उल्टु हूणो छ पैली त साहित्य संस्कृति का संरक्षण अर सम्वर्द्धन का वास्ता क्वी ठोस काम नि हूणो छ अर दुसरो जो कुछ लोग संस्कृति का नाम पर घ्याळू मचाणा छन वो सिरप निम्न स्तर का गीत/रचना ज्वान पीढ़ी का समणि पेश करी कै संस्कृ ति का जलड़ा घाम लगाणौ काम कर्ना छन यूं लोगूं मा जादातर वो छन जो पहाड़ की परम्परा, रीत-रिवाज, तीज, त्यौहार आदि का बारम न त अंक्वे कै जणदा अर न अंक्वे कै जणण चांदा।

आज जब व्यवसायिकता अर बाजारवाद समाज

बात-विचार

गढ़वालि भाषा का विकास मा अवरोध

✍ दर्शन सिंह रावत

उत्तराखण्ड राज्य का अर्न्तगत गढ़वाल कमिश्नरी जो कि ३० हजार वर्ग किमी. मा फैलीं छ का ३८ लाख लोगों की पहचान गढ़वालि भाषा का विकास का बाटा मा कुछ स्वार्थी लोग सदनि उपुरचिण्डा खडा कर्ना रैन। गढ़वाल का पंवार राजवंश की राजभाषा गढ़वालि मा द्यबतौं का जागर, आवाह्न, स्तुति, माँगल अर तन्त्र-मन्त्र आदि याद करैणा रैन। गढ़वालि मा सन् १७५० बटे लिखित मा पत्र, साहित्य, शिलालेख, दानपत्र लिखैण ा रैन। या भाषा न्याय, प्रशासन अर शिक्षा को माध्यम रै।

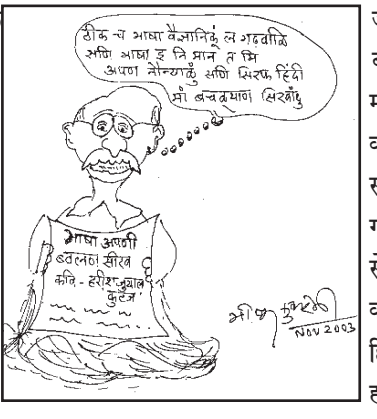

जार्ज अब्राह्म गियर्सन का लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया १८९४-१९२९ मा गढ़वालि को तुलनात्मक अध्ययन कैरिक भाषा का तौर पर इस्तमाल हूणो बतए गे छयो। गढ़वालि मा भाषा का विकास मा सबसे बड़ू झटगा गोरखाली से ह्वे वे बगत हमारो भौत सि साहित्य जलै दियेगे नष्ट कैर दियेगे, गोरखा शासन से मुक्ति का बदल अद्दा गढ़वाल अंग्रेजों तैं दे दियेगे,

गढ़वाल का राजा मा जो क्षेत्र छौ वो अविकसित छयो, पिछड़ो छौ इलै गढ़वालि भाषा को जो रिवाज हूणो छौ वैते झटगा लगि, राज्य का पास साधनों की कमी हूण से साहित्य प्रकाशन मा बाधा ए, ब्रिटिश गढ़वाळ मा हिन्दी अर अंग्रेजी माध्यम से शासन हूण लगि, साहित्य पर वाँको असर हूणू हि छयो। लोगों मा भाषा का प्रति पैलि जन प्रेम नि रै। गढ़वालि साहित्य को विकास भि रूक गे।

संयुक्त राष्ट्र संघ की संस्था यनुेस्कों न् विश्व की भाषाओं तैं खतरा मा बताण वला एटलस का दुसरा संस्करण तै जारी करि छौ। यूनेस्को न विशेषज्ञों का हवाला से बतै कि पूरा विश्व मा ब्वले जाण वळि छः हजार भाषाओं मा बटि करीब अद्दा खतरा मा छन पिछली तीन शताब्दियों मा भाषाएं तेजी से खत्म या गायब ह्वीं। कै समुदाय की भाषा तब खतरा मा हूंद जब कम से कम तीस प्रतिशत बच्चा वीं तैं सिखदा नि छन। क्वी भाषा किलै अपणी पच्छ्याण हरचांद येको खुलासा कैरि एटलस ब्वलद कि इन तब हूंद जब वा कै आर्थिक रूप से मजबूत संस्कृति का सम्पर्क मा आंद। यी गढ़वालि भाषा दगड़ ह्वे।

गढ़वाळ मा जनसंख्या बढ़ण से खेती से गुजरो हूणो कठिन ह्वेगे, लोग मैदानों की तरफ पलायन कन बैठगिन, रोजी-रोटी खुणे हिन्दी सीख, ब्रेड-मक्खन खाणा खुणे अंग्रेजी जनी कठिन भाषा सीख दे पर बच्चों तै गढ़वालि नि सिखै पर जब वो लोग पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र गैनि बच्चों तैं बड़ि खुशी से पंजाबी, गुजराती, मराठी सिखांदी पर अपणी भाषा सीखण कठिन लगद। लोग अपणी धर्ति, भाषा संस्कृति में कटेण लगीं, गौं जाणौं भूलगेनि। गढ़वालि भाषा अर संस्कृति तै लोग गर्व से नि अपणौदा, यांका वास्ता वूंका मन मा कखि न कखि हीन ग्रन्थि विद्यमान छ। इलै हि गढ़वालि भाषा साहित्य को विकास नि ह्वे साको अर ये नागरिक अपणी संस्कृति तैं भुलदा जाणा छन।

आजादी का बाद शिक्षा को प्रचार-प्रसार हूण लगे, शिक्षा को माध्यम मातृभाषा की जगा हिन्दी हूण से लोग गढ़वाल मा रैकि भि उप्रि सि ह्वेगिन मैदान की तरफ जाण चाणा छन उच्चवर्ग मा जाणा कि लालसा मा अपणी भाषा तै छ्वडणा छन लोगों मा साहित्य संस्कृति अर भाषा का प्रति निरन्तर उदासीनता बढ़दा जाणी च,

अपणी भाषा सीधा दिल पर असर करद याँ तैं ब्वलण मा शर्म या हीन भावना का जगा गर्व हूण पर ही भाषा का विकास का दगड़ै दगड़ समाज को विकास हूंद समृद्धि आंद लोग मिलदा जुलदा छन अपणा सुख-दुःख बतां दिन। उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन का दौरान गढ़वाली भाषाविद् गढ़वाली साहित्यकार,

विचारक जो कि अलग-अलग विचार धारों मा बट्यां छया एक ह्वेगिन वूंन जनता तैं चितै नेतृत्व प्रदान करि अर आन्दोलनों मा भाग ल्हे अर इन कैरिक राज्य बणण पर वो स्वचण बैठिगिन कि अब त हमारि भाषा राजभाषा बणली, गढ़वाळि भाषा साहित्य अकादमी को गठन होलो सरकार पाण्डुलिपियों का प्रकाशन मा मद्द कारली शिक्षा को माध्यम मातृभाषा होलो परन्तु या बात वूं लोगो का स्वारथ का खिलाफ छ जो फूट डालो और राज करो की नीति अपनौणा रैंद छा,

वूंन नयी चाल चलि अर साहित्यकार भी वूंका बखाण मा एकि बिना पूरी जानकारी का ब्वन लगीन कि उत्तराखण्डी भाषा बणै जा। पैली जो छ वीं तैं समाल्ण बजाय वै भाषा का विकास की बात करणो कै भि आदिम तै भाषा विहीन कैरि देणों, वे ही तराँ छ कि एक मनखि तै कै खाली टापू मा अकेला छोड़ि देणो वे तैं वेका इतिहास से अलग कैरि देणो संस्कृति विहीन कैर देणों भि एक सामाजिक अपराध छ वै तैं वेका गौरव से अलग कैर देणो वैते पखों बिना पंछी जन बणाणौ छ भाषा से व्यक्ति की पच्छ्याण हूंद, भाषा वेका विकास की सीढ़ी हूंद वेकी सांस्कृतिक परम्परा तै अगनै ल्हिजांद,

गढ़वाळि अर कुमाऊँनी भाषा विकसित छन अर राज्य की द्वी राजभाषा ह्वे सकदन जनकि कनाड़ा स्विटजरलैन्ड मा छन। उत्तर प्रदेश मा द्वी राजभाषा छन त उत्तराखण्ड मा किलै नि ह्वे सकदी,

गढ़वाळि व कुमाऊनी भाषा विकसित छन यूंको शब्दकोष छ व्याकरण छ लिपि छ, साहित्य को इतिहास छ इलै यूंको विकास करे जावा सरकार यामा मद्द कार याँकी बेवसाइट बणये जैं , टेलिविजन चैनल शुरू करे जावा।

भाषा को निर्माण त समाज अपणी जरूरत खुणे करद अर येका बणण मा ४५०-५०० साल लग सकदन। भाषा जो विद्यमान छ वा तै किलै भुलाण चाणा छन लोगों तैं क्या ५०० साल भाषा का बिना रखण चाणा छन वूं तै अपच्छ्याण वळि अजाण भीड़ को हिस्सा किलै बणाणा छन। जो छैं छ वे तैं किलै खौण चाणा छन।

भाषा अस्मिता की पच्छ्याण छ, संस्कृति की संवाहक छ ये से ही समाज को विकास हूंद हम किलै समाज को विकास रोकण चाणा अकबर न भि दीन ए इलाही धर्म चलाणै छौ वेका म्वरदै खतम ह्वेगे यूरोप मा ऐसपटेनटी भाषा बणैकि पुरण ी भाषाओं तैं खतम कनै छौ पर लोग अपणी फ्रेंच, जर्मन, इटिलियन भाषा रखण चाणा छन,

उत्तराखण्डी भाषा न त छ अर न छै, वेका नाम पर विकसित गढ़वाली की बलि क्यो दीण चाणा छन। गढ़वाली भाषा का विकास का वास्ता जागरूक नागरिक, साहित्यकार, पत्रकार जुड़ना छन जै से कतनै लोगों तैं खतरा महसूस हूणो छ गढ़वाली त संविधान की आठवीं सूची मा दर्ज ह्वेकि राजभाषा बणकि राली येका बाटा मा उपुरचिण्डा लगैकि येको

vvv

आर्केस्ट्रा का घपरोळ मा गोळ, नौबती ढ़ोल का बोल

✍ सुलोचना परमार उत्तराखण्डी

जै समाज की अपणी सभ्यता अर संस्कृति नि होंदी बाद मा वे समाजो क्वी नौं ल्हिदरु नि रौंदू ईं बात तैं सब्बी जणदन संसार मा कै भी समाजै आपणी पछ्यांण तभी ह्वे सकदी जब वे कि अपणी संस्कृति हो, अपणी बोली भाषा हो अपणा तीज त्यौहार होन तथा अपणा जीवन जीण कू एक ढ़ंग हो, यू हमारु सौभाग्य च कि हिमालय कू उत्तराखण्ड क्षेत्र भौत पुराणा समय से सांस्कृतिक रुप मा बेहद समृद्धशाली रै, शुद्ध भारतीय संस्कृति की झलक यखि मिल्दि, यख का त्यौहार, विश्वास, लोकमान्यता, लोकनृत्य, लोकगीत, वीरगाथा, वैदिक संस्कृति से मेल खान्दन,

जनी जनी हमारा समाजौ कू विकास ह्वे इंसानन अपणा मनोभावों तैं, हाव भावों तैं नाच गाणा अर संगीत का द्वारा लोगों तक पहुँचाई। सामाजिक व सांस्कृतिक विकास का दगड़ा दगड़ी जन संचार माध्यमों कू भी विकास ह्वे वास्तव मा गीत संगीत अर नाच मनख्यूं कि कुंगली भावनाओं से उपज्यां विचार छन। गीत, संगीत अर नाच उत्तराखण्ड मां यू तीनों विधाओं कू महत्व कुछ ज्यादा ही ह्वेगे किलै कि आजकल इलैक्ट्रोनिक कू महत्व अर मीडिया की बाढ सी ऐगे ज्यां मा नीति रीति तैं अर सांस्कृतिक मूल्यों तैं खदरा मा धारी तैं विदेशी संस्कृति सस्तू मना. रंजन, विदेशी मानसिकता पर बण्या कार्यक्रम अर विदेशी संस्कृति की लत उत्तराखण्डी समाज मा बढ़णी छन ज्यां से सांस्कृतिक परिवेश तैं जिंदा रखणा वास्ता हमतैं अपणा गीत संगीत तैं जिन्दा रखी तैं जन माध्यमू का रूप मा प्रचारित व प्रसारित करण होलो तभी हम भैरे संस्कृति कू सामाजिक हस्तक्षेप कम कर सकदां।

वास्तव मा गीत संगीत अर नृत्य पैली बटि ही मानवीय संवेदनाओं तैं छूण मा महसूस करण मा प्रभावकारी साबित ह्वेन लोकगीत मनखी जात कि कुंगली भावनाओं तैं समणी ल्हौण ों एक माध्यम च दुःख अर सुख द्वी अवस्थाओं मा मनखी अपणी संस्कृति व परिवेश का आधार पर वे तैं सुर अर ताल दें दू, तभी त सुख मा गै कि तैं खुशी अर दुःख मा गैकी तैं अपणी खैरि बिपदा भूल जांदू, इनी भावों का क्षण ही मनखी की ओठणी मा गीतों कु स्वर गुंजोदन त गीत का बोल तौ ही ओठण्यूं से निकलदन,

लोकगीत मानव जीवन की जिकुड़ी की धडकन छन, यूं तैं सूणी तैं व गै शान्ति मिल्दी, तभी त पहाडों डाँडयूं मां सीढी नुमा पुंगड़यूं मा हौळ लगोंदरु किसान भी गीतों तैं गैकी मस्त होयूं रौंदू कै जमनों मा रोपण ाी लगौंदी दा क्या ढ़ोल दमौं बजदा छा, गीत लगौण मा कामौं कू पता ही नि चलदू छौ, गोरु बखरा चरौंदी दा डांडयूं मा ग्वेर छोरा जब बाँसुरी की धुन छेड़दनि व गीत लगौण त डाँडी काँठी भी अपणी आवाज तौं दगड़ी मिलौदन वास्तव मा ई लोकगीत हमारा समाज की वूँकी खुशी अर गम, चेतना ऊर्जा की वाहक छन तभी त सुबेर बटि श्याम तक घास कटदरी तौं गीतों का ही सहारा डाँडी काँठयों दगडी बच्याण ाी रौंदिन जरा सोचा गाड़ी चलोंदरु डरैबर भैजी ऋषिकेश व कोटद्वार का स्टेशन बटि गाडी का पहियों तैं गीतों का सहारा तौं अंधेरा पहाडों अर अंधा मोड़ों तैं अंधेरी रात्यूं मा पार करदन, दरअसल मा ई लोकगीतों मा मानव जीवन की उल्लास की उमंग की करुणा की व वूंका समस्त दुःखों की सुखों की आत्मसात करण की अद्भुत क्षमता च।

आज पर्वतीय संस्कृति का संरक्षण व संवर्द्धन का लगातार

प्रयास होणा छन, जैमा पौड़ी, नैनीताल, मसूरी, देहरादून शहरों मा शरदोत्सव, ग्रीष्मोत्सव का आयोजन तथा श्रीनगर, देहरादून, अगस्त्यमुनी, गौचर मा सांस्कृतिक मैलों का आयोजन होणा छन वास्तव मा अपणी लोक परम्परा की समृद्धि करण का वास्ता पहाड़ वासियों कू सही वक्त पर सही कदम होयूं चैंदू ढोल दमों जु उत्तराखण्ड की संस्कृति की पछ्याण च अब वे तैं लोग भूल जाणा छन, शादी, ब्याह, मुण्डन, जनेऊ संस्कार यामा ढ़ोल, दमोकी उपस्थिति शुभ मनेंदी छै पर अब त पाश्चात्य संस्कृति कू इन्नू प्रभाव पड़णू च कि ई अपणी संस्कृति की आत्मीयता व पवित्रता तैं भी लोग भूल जाणा छन ज्यांकी वजह से दूर डाँडी काँठी का गौं मा भी अब ढ़ोल दमों रणसिंगा अर सब्बी गाजा बाजों की जगा आर्केस्ट्रा की उल जलूल संस्कृति को बदरंग प्रभाव पड़णू च आज ब्यो-बरत्यूं मा धुंयेला (दीपोपासना) ताल अर इन्नी कई ताल सुणणू तैं कन्दूड़ तरस गिनी,

आज आर्केस्ट्रा ढ़ोल से मंगलस्नान, गायदान धूलिअर्ग अर वेदी (विवाह मण्डप) म बजायी जाण वाली विशेष धुन छीन यालीन अब जु गौं मा दूर दूर बिखर्‌यां मकान छन तख रौण वाला बुढ़्या मनख्यों तैं त पतै नि चलदो कि कबरी बरात आई अर कबरि गै। कि आर्केस्ट्रा मा पैटवा बाजा नि लगदो, मंगल स्नान गायदान, कू भी पता नि चलदो किलै कि ढ़ोल की विशेष वरन धुन अब सुणाई नि देंदीन, अर श्रृंगार अर शान्ति की प्रतीक नौ निधि ८ सिद्धि १४ भुवन ६ पत्तन अर २२ पड़ताल वाली अभिव्यक्ति संगीत युक्त नौबती ढ़ोल से नि सुणाई दें दीन,

आज रहमानी ताल (विशेष अभियान) भी नि बजदू जु निःसन्देह हमारी सु संस्कारित अर सुव्यवस्थित संगीत संस्कृति पर हमला च नाच याने लोकनृत्य मानवीय संवेगों की एक सहज अभिव्यक्ति च, उत्तराखण्ड हिमालय मा गीत संगीत अर नृत्य का कार्यक्रम साथ-साथ चलदन थड़्या, चौंफला, झुमैलो, नाग सिद्धवा, ग्वरील, नरसिंह तथा पांडवों का लोकनृत्य ई देवभूमि मा विशेष लोक प्रिय छन लेकिन भागदौड़ की जिन्दगी अर केविल संस्कृति का प्रचलन से लोगों मा व्यक्ति वादी दृष्टिकोण पनपुणू च जैसे समाज मा आज टी.वी. का प्रचलन से लोग पिक्चर, सीरियल देखण मा इथगा व्यस्त रौंदा कि पंचैती चौक मा झुमैलो अब नी लगदो हो जौनपुर (टिहरी गढ़वाल) अर जौनसार यां कू अपवाद च उत्तराखण्ड से भैर बसण याने पलायन करण वला लोगों की प्रवृत्ति समझा या मानसिकता अपणी भाषा संवर्द्धन व गाड़ियों मा बाजारु मा, दुकानु मा, मेलौं मा, कौथीग मा अफू तैं श्रेष्ठ दर्शौण का वास्ता कुछ लोग भूलकरि भी अपणी मातृभाषा नी बोल्दा, पाश्चात्य संस्कृति कू संक्रमण अब गौं मा भी ह्वे गै, अर नई पीढी त अपणी भाषा से दिन पर दिन विमुख होन्दी जाणी च।

संस्कृति कू एक महत्वपूर्ण आयाम च वखा का लोगों की वेशभूषा अर पैनावा (पहनावा) ईं दृष्टि से भी उत्तराखण्ड की संस्कृति समृद्धशाली रै, उल्लेखनीय च कि पर्यावरण व जलवायु की दशाओं पर भावर से उच्चहिमालय तक कई प्रकार का वस्त्र लोग प्रयोग मा ल्हौदन परन्तु अब फैशन की बयार मा कुछ त बिल्कुल लोग अपणी वेशभूषा पहननू भूल गिन जन त्यूंखा, चदरी, कामल, पाखला, लवा, ऊनी टोपी, जुराब, त्रगड़ी (करध ानी) कभी-कभी दूर दराज का क्षेत्रों मा यदा कदा देखणू मिल जान्दन ई मोरा लोगू तैं पर्वतीय परिवेश मा सुन्दर अनुकूलन करण मा सक्षम छा जब कि आज परिवर्तन की लहर मा लोग कोट पैंट जींस पुलोवर कार्डिगन पहनना छन, जवाहर कट अर खादी कू प्रचलन भी उथगा नि दिखेंदो जथगा पैली छौ,

उत्तराखण्ड की संस्कृति कू एक अनर्थ यू भी च कि यखा पर्व त्यौहार अपणी चमक खोणा छन लोग अपणा मैलों कौथिगों तैं याद करदन पर वे मा भाग ल्हेण से बचदा छन, होली, बग्वाल, दशहरा, पांडवनृत्य, रामलीला, नौरत्ता आदि मा लोग सिर्फ औपचारिकता निभौणा छन, जख थौडी भौत परम्परा जीवित भी छन जन बागेश्वर कू उत्तरायणी मेला, उत्तरकाशी कू माघमेला श्रीनगर कू बैकुन्ठ चतुदर्शी मेला, बसन्तोत्सव त तैंमा भी कब विघ्न पड़ जौ क्वी नी जणदों, ज्यां से दिल खोली लोग शामिल नि ह्वे सकदा, ई परिवर्तन की आँधी मा मंत्रअर आयुर्वेद अप्रसांगिक ह्वे गिन अर ज्यां से तुरन्त फायदा हो इन उपाय लोग करणा छन, नवान्त की पूजा परम्परा वृक्ष पूजा, जलाभिषेक आदि धीरे-२ छुटणा छन जीवनोपयोगी सांस्कृतिक रूप से प्राणवान और आर्थिकी का स्त्रोत कुटीर उद्योग समाप्त होन्दे जाणा छन ज्यां से बेरोजगारों की भीड़ बढणी च वूंकू vvvलगातार पलायन बढ़णू च,

अब आवश्कता महसूस होणी च या इन्नू समझा कि

ननि कथा

माँ की टक्क

✍ **गजेन्द्र नौटियाल**

सुबेर जब सूरज कांठ्यों का पोर झिमलाट कैदु, भात गुठ्यार मा छानी भितर बाध्यां गोरु-बछरा खुलि हवा मा औंण तैं अडाट मचै देंदा छया। वूंका गळा बंधी घंडुलि-खांकर वूंका मनै बात ग्वस्यों तैं बतैं जांद छया। अर यन माहौल मा एक हैंकि रंगत ज्व मैं तैं अजाण लगदि छै वा हमरा गौं का खोळा-खोळौं बटि "अला चलणु छ स्कूल", "पाटी पर घोटा लगांयू छ कि ना", "चला रे आज स्कूल मा दळ्या बणौण तैं लाखड भि लिजाण बल", "औ रै रामू फटाफट"। जना कै बोल-बाक बोलदा हमारा गौं का स्कुल्या नौनी-नौन्याळों कु हल्ला-गुल्ला।

इनै ये रौळा-धौळा मा मगन मैं पिठि परैं दादी कि भताक खै रिट्द छौ त दादी समझौण्यां-समझौदि छै, अरे ब्यटा वु स्कुल्या छिन पार धार पोर ढाब सौड जाण वोन, भौत दूर छ, जब बडु ह्वे जालू त तब त्वैन भि जाण ब्यटा हैं! दादी सजा छ सुणौंणि कि जमानै रीत छ बिगौणि म्यरा समझ मा नि औंदि छै। मेरी दादी को नौ छौ पूर्णा देवी पर लठ्याळा गौं वालु कि क्य मजाल कि कभि वोन "पूर्णी बुढड़ि" पर नौ छोड़ि कुछ बोलि हो दादी कू। दादी न्यत्यांण त नि छै पर बांठि -सयाणि खूब छै। घर मा मजाल क्या कि दादी छुंयों-छुंयों मा कर्या फैसला पर भी क्वी रवीं- चवीं करु। हमारि गौंउ कि औज्यांण दादी टल्यांयि गुदड़ि मा घटा टोप निंद मा सैरा दिनमान स्ययां म्यरा बाबाजि तैं लबराट कै दादिन गाळि पल्यायिन हे मात "मैमा", दिन-दोफरु ह्वैग्ये। तुम्हारि मवासि क कनु बिजोग पड़ि। सैरा गौं कुड्या लोग स्यरों चलिग्या, आधा-पाधा रोपिणि लै सकिगिन लोग । अरे खड़ु उठ दौं। दादी टोकण सूंणि बाबाजि भि उणिंदा आंख्यों झपकैक स्यरा बाढ लग्या त वू थैं दादी, चुल्हा -चौका करि भैर औकि मेरि मां पर धौंत्रये, "लिपै- पुतै नि ह्वेलि तेरि मैत्यों कुड़ि पर हैं एक घड़ि-घटौं काम परै सेरू दिन काटलि त्वैन, जा लाखड़ा ल्यों अर द्वी कोदळि बणै भट्ये। हे। सरस्वति, भानू ऐ माचु आ बिठाळयांण खा मातो स्कूल नि जांदा आज । भैजी -दिदी सुरबुटकै रोटि खांण बैठ्यां अर मैं भी दादया ध्वरा बैठि पुछण भैग्यों" दादी बिढाळ्याण किलै खांदा "दादीन गुमड़ाट कै बतै -भूख नि लगदि तब। "अर भूख कनि लगदि दादी" बस यनु पुछणु क्य थौंकि दादीन मुछ्यळु उठै मेरी पोटिगि तरफां हिरै बोली "जब आग लगदि पोटगा पर"। दादी कु गुस्सा उमाळ देखी भैजी कौं कोदळि उठै खड़ा ह्वैग्या । घी कि गोंदगि त रूवटी मा रैग्ये पर गुडै डळि म्यळा फण्डु खत्येगि।

भैर बटि बडिजी भट्येन "हे गुड्डी, हे सरु थोडा यों छोरों भि जग्वाळ्यां बेटी" उनै दादी कु कुकड़ाट" हां नितर क्वै खांणु च त्यरा छोरो तैं। अर भैर भागदा दिदी - भैजी दगड़ मैं भि चौका दांदा मा ऐग्यो। सज्यां-धज्यां स्कूल्यों गुमड़ाट करदा स्कूल जांदा टक्क लै द्यखदि रौं।

पिछनै बटि दादि न चम्म अंग्वाळ मारी खोंखला पर उठैयू "हे छोरा कख च चौका दांदा पर खडु ह्वयूं उन्द पड़द पगार उदैं", लमडणै डेर कै थै मैं किलक्वारि मारी स्कूल जांणे हिंगर लै ग्यो लांण दादिन भात -दूध मा रैळ खलाई, सैद चटाई पर क्ये मांण छौ मैन। साग-भात मा लोण ह्वैग्ये। अब नि खांदू ,मैं स्कूल जादौं, दिन भर हिंगर रै।

ब्याखुनि दां दादि की कछड़ि लै ग्ये, द्यख लो भोळ बिटि ये चिमिल्डा छोरा न भि स्कूल जांण। झगलु- टोपलि त बणि जाली पर बुढ्या सुंणा छिन ये क तै सुबेर सार मा एक पाटी बण्ये द्यया पटेला ओबरा छिन अर तेल -मसु लगै दियां। कुणेंठा पर बैढ्या दादा जी न मेरि तरफां देखि मुंडळि हिलै ठीक छ ठीक। निर्णय ह्वैगि थौ। रात भर गैण्यों गाणिक भोळै तैयार मा रौं।

सुबेर सार अण्ध्वायां मुख भैजि कौं दगड़ि आधा कोदळि खै तैयार ह्वै ग्यों। चौका दांदा सि पैल्ये माँ जीन तिंदा हाथन मेरि मुखड़ि साफ कैरी "ज बाबा कै दगड़ि लड़ि न वा, ठोकर नि लगै वा, अर या खुटौ पर कांडा नि बैठै" अर नि जाणि क्य-क्य बोलदि रै, अर मैं हाथ छुड़ौदि-छुडौद दूर चलिग्यूं। दादि मा का पिछनै कुझडि कय बबड़ाट रै कनी पर माँ टक्क लै उनैइ हेरदि रै ज थैं हम धार पोर जाणा छा,आज तलै माँ कि नजर मेरि

सच्चो-किस्सा

गजानंद टोपी अर 'वुड़'

✍ **बालेन्दु बडोला**

य हमर अपणै गौं कि लगभग ४०-५० वर्ष पुराणि बात छ, जब हमरि ही बिरादरी क ढिंडु दाजि कु जवान नौनु मंगलू काका देहरादून क सर्वे ऑफ इण्डिया दफ्तर म चपड़सि क पद पर नौकरि करदु छयु। वे सुनहरा युग म चपड़सि बणणा खुण आज कि तरौं क्वी भि योग्यता तय नि छै, सिवाय यां क कि लड़का कम से कम अठारह साल कु, मामुलि तौर पर साक्षर होण चैंदु छौ। तो भि क्वी छोरा सरकरि नौकरि करणा कु तैयार नि होंद छया। फिर भि ढिंडु दाजि कि जिद पर अपणै गौं क एक हैंक चपड़सिन, अपणा बड़ा साब क समणि पेश करि कि, मंगलू कि उम्र पंद्रह कि जगह अठारह लिखै कि, जबरदस्ती तै थैं चपड़सि भर्ती करै दे छयु। अर तब ६ महीना बाद मंगलू न छुट्टि म घौर औण कि अपणि मनसा अपणा बुबा पर रैबार भेजिकि प्रकट करि दे छै।

बस तभी अचणचकि गौं बटि बुबा कि एक चिट्टि डाक से क्य पौंछ कि मंगलू खुण जन ब्वदीं, पेरशान्यूं कु फंचु ल्हेकि अैगे।

कुशल क्षेम क अलावा गौं गाला क हाल समाचारु पश्चात् आखिर म बुबा कि ल्यखीं द्वी बातु से मंगलू कि ख्वपरि बुरी तरौं चकरै गे।

पैलि बात- 'ब्यटा छुट्टि म घौर आंद वक्त हौरि चीज्यूं क दगड़ि ही गजानंद टोपी जरूर ल्हये।'

दुसरि बात- 'अर हाँ, नौकरि बटि पैलि बार घौर आण कि खुशी म अड़ोस-पड़ोस गौं म बंटणा वास्ता चणा लैची दाणा अर गुड़-वुड़ ल्हाणु भि न भूलि।'

मंगलू तैं दुसरा दिन ही घर का वास्ता शाम बख्तै गाड़ि पकड़णि छई। वो सबेर हि झटपट तैयार ह्वै कि, दुकन्यूक खुलदा हि अपण बुवा कि मंगईं चीज्यूं तैं खरीदण खुण बजार जनै गै।

हौरि सभि खरीदारि करणा का बाद वैन दुकानदार तैं पूछ "लालाजी, आपके पास गजानंद टोपी है?" लालन मुंड हिला द्या, "ऐसी तो कोई टोपी फिलहाल अपने पास नहीं है, भैया"- ब्वलण क दगडै वैन मंगलू थैं घूरिकि भि द्याख कि यो क्य आदिम छ!

"वुड़ तो होगा?" मंगलू न फेरि पूछ।

"वुड़? ..... वुड़ तो नहीं। हां, गुड़ कहो तो दे सकता हूँ" लालान जवाब दे, "नहीं, गुड़ तो मैं खरीद चुका हूँ" मंगलू न बोलि, "बस वुड़ ही खरीदना बाकी रह गया है।"

तब असमंजस म प्वड़यूं लाला अपणु मुंड कन्याण लैगि अर मंगलू बजार म अगनै बढ़ि गै।

मंगलू ब्यट न देहरादून कु सरु पल्टन बाजार छाण दे, पण क्वी दुकानदार वै तैं गजानंद टोपी अर वुड़ नि दे सक्य।

आखिर कार एक आदमि न वैं तैं सुझाव दिने कि शहर क चुक्खू मुहल्ला म एक लाला रोशनदास रहंद। वो भौत चालाक च, अर सबु कि समस्यों थैं चुटकि बजादै हल कैर दींद, तू भि वे कै पास जा काम बण जाण।

मंगलू न लाला रोशनदास कि दुकान पर पौंछद हि बड़ी व्यग्रता से वै पर अपणु पैलु सवाल झोंक दिने, "लालाजी , गजानंद टोपी मिल सकती है? "लाल जीन परखी अर तत्काल चितै ग्याई कि टोपी जरूर कै गजानंद नाम धारी मनखि क वास्ता चैंदि ह्वैलि, जां थैं यु सीधु सादू लड़का समझ नि पाणू च। तैंन तुरंत हि डेढ़ ईंच मुस्कान अपणा होंठु क खैंचि कि बोलि, "गजानंद टोपी ?..... हाँ-हाँ, मिलेगी कैसे नहीं भला! अभी लो।"

इतगि बोलिकि लाला भितरखण्ड गाइ, अर वख बटि एक जरीदार किश्ती नुमा टोपी ल्हे आइ। "यह लो जी, ये रही गजानंद टोपी! मुश्किल से यही एक बची थी, शायद तुम्हारे

ही भाग्य से। वर्ना गजानंद टोपियां तो अब जयपुर से आना ही बंद हो गई हैं।"

"क्या दाम दूं?" खुश ह्वेकि मंगलू न टोपी थैला मा कुच्यांद पूछि।

"सिर्फ ५ रूपये" लाला रोशनदास न सहज भाव से बोलि।

"तो फिर आपके पास 'वुड़' भी जरूर होगा, लालाजी?" हर्षित ह्वैकि मंगलू न फेरि पूछि।

"हाँ जी, हाँ। क्यों नहीं, पहले ही क्यों नहीं बताया तुमने? हमारे पास तुम्हें मच्छर की मूंछ से लेकर लंगूर की लेंड़ी तक सब कुछ मिल सकता है। बस, हुकम करने की देर होती है"- अब कि बार लालान पूरी द्वी ईंच लम्बी मुस्कान दकड़ि अपणु एक टुट्यूं दांत भि झलकांद बोलि, "मैं अभी वुड़ को भी खोज कर दिये देता हूं, पर हाँ, किसी को दिखाना या जिक्र मत करना। वर्ना और लोग भी मांगने लगेंगे और 'वुड़'जैसी दुर्लभ चीज की पूर्ति करना मेरे लिये परेशानी का कारण बन जायेगा।"

मंगलू न कृतज्ञ होंद बोलि, "अजी मुझे क्या पड़ी है किसी से जिक्र करने की, चुपचाप ले जाऊंगा। किसी को भनक तक नहीं लगेगी। आप बेफिक्र रहें।"

तब लाला रोशनदास न क्वी तरल पदार्थ से भ्वरीं एक बोतल ल्हैकि मंगलू तैं दिनै अर वे भग्यान सस्ता जमन म भि वै से - गजानंद टोपी अर वुड़ -द्वी चीजु क पूरा दस कळदार (रूप्या) ऐंठ दिनें। (जो आजकल का ५० रूप्या से भी जादा ह्वाला)

मंगलू भौत खुश ह्वै कि चल द्या। शाम गाड़ि म सोचण लैगि- 'जब मि इनी दुर्लभ अर मंहगी तैं अपणा बुबा थैं दिखौंलु, त सो गद्गद ह्वै कि म्यरि पीठ जरूर ठोक द्यालु कि शाबास ब्यटा तिन त कमाल कैरि दे!'

गौं पौंछि कि अन्य सामान क दगडि मंगलू न बडी शान से अपणा बुबा क ऐथर टोपी अर बोतल धरि दे नि। तब बोलि, "य च गजानंद टोपी अर यो च तुमरु वुड़। द्वी चीज इतगा मुश्किल अर मंहगी छन कि तौं क हि दाम पूरा दस रूप्या देंण प्वड़ी।"

टोपी देखि कन अर बोतल खोलकि सुंगण क बाद मंगलू कस बुबा-बुड्च ढ़िंडु दद्दा-फटकरे कि रैग्या। वैन बोलि, "अबे, निरभाग ब्यटा, तुत निण्ट मूरख चपड़घण्ट छै रे। तिन अगर जरा भि अकल लड़ै दे होंदि त दुकानदार त्वै से इतगा ज्यादा रूप्या नि झटकि सकदु छौ। अरे, मिन त तेरा भतीजा गजानंद खुण टोपी मंगाई छै। पण लगणू च कि शैत मि गजानंद अर टोपी क बीच 'खुण' लिखण से चूकि ग्यूं। बस, तु वां थैं ही क्वी खास किस्म की गजानंद टोपी समझिकि ख्वज्याण लैगि।..... गुड़ का वास्ता भि मि बोलचाल की भाषा म गुड़-वुड़ लिख द्या छौ। अर त्वै बल्दनाथ न वुड़ थैं भि क्वी नई चीज समझि दे।"

"एक मामूली टोपी थैं 'गजानंद टोपी' बतै कि काइयां

vvv

HAPPY DIWALI

New Beauty Dyers &
Dry Cleaners

Rafoo, Charkh, Fall, Piko, etc.

Ladpur, Raipur Road, D.Dun Ph.- ***0135-2780942***

Pro. KISHAN LAL

कविता

तीन छ्वटि कविता

गिरीश सुन्दरियाल

एक : राजनीति

हमर यखा लोग
स्वरोजगार
इलै नि करदा
किलैकि क्वी बिचरो
अगर कुकड़ा पल्द
त वेको ही स्वारो
बिरलो पाळ देंद।

द्वी : डुट्याळ

डुट्याळ
हमर गौंका
जिमदार
थोकदार
शौकदार
फौंदार
अर हम
अपणा गौं का
गलादार!

तीन : इक्कीसों सदी को बालक

ब्याळि हमर गौं
एक मौ को नौनू ह्वे
पर कुनश ह्वे!
वेका एक हथ पर मोबाइल
अर हैंका हथ पर माउस छौ,
वो हूणा बाद
र्‌वै नी!
हलो-हलो ब्वनू छौ,
क्वी ब्वनू
वेकी पीठि पर
एक गर्रो बस्ता टग्यूं छौ
अर वो रुंदा-रुंदा
होमवर्क-होमवर्क ब्वनू छौ,
बाजा-बाजा त इन बि ब्वना
कि वो इन्टरनेट द्वारा अफुखुणि
दूधै बोतल मंगाणू छौ।

चिट्ठी

✍ विजय कुमार 'मधुर'

(एक)

देसि गुरूजि तैं
नि होणि
यखा आबो-हवा सूट
मेडिकल द्वी मैना
हौरि बढ़ै यालि
हैंका गुरूजि न
काटयलि यख
तीन साल
रिटणा छन
जुगाड़ मा अपणा
ध्वार देहरादून का,
इंत्यान मुंड मा छन
घौर आ जयां
गेस पेपर ल्येकी
द्वी-द्वी सेट
एक फलैंग आण पर
भैर चुलै बि दयूंलू
त तुम दुसरु
पौंछे देल्या
भुल्यां न भारे!
तुमरै सारा बैठयूं छौं

(द्वी)

भैजी! समन्य
तुमन समझौं मी
जब तिन
हाईस्कूल कैरि यालि
त इण्टर सैंस
किलै नि करणू छै
मिन तुमरि बात मानि
ले दया एडमिसन
पण भैजी
आज पूरा छः मैना ह्वेगेन
सैन्स कि क्लास लग्यां
प्रिंसिपल साब तैं
भी फुरसत नी नेतागिरि बटै
रोज पौंछ्या रंदि
विधान सभा
मंत्री बणणा का बि
चांस छन बल।

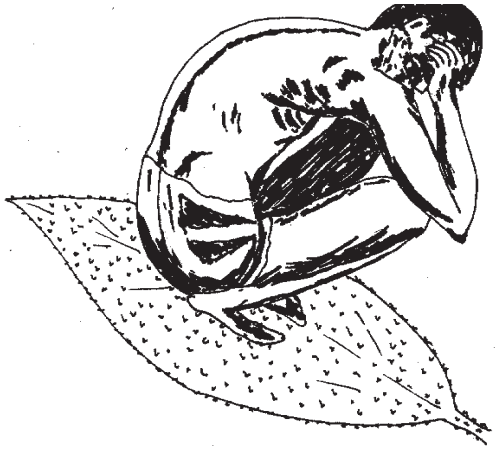

ब्वे

✍ **विजयेन्द्र चन्द्र कुमाँई**

नौ मैना तेरि पुटगि पर रैकि यी दुनियां मा आयो,
सदनि तेरि खुखली पर ख्यन्नु रायो।।
सिंचणी रौण मैं सणि तेरा आंसू कि बौछार
टकटकू बणैगेन तेरा दूध की छलार।।
तेरा प्यार कि फैकळि लिपर्टी रों सदनि
मेरू मुण्ड तेरि खुट्यों मा झुक्यूँ रौ सदनि।।
माँ तु चन्दनै डाळि गुरौ सि लिपट्यों त्वे पर,
तेरि खुशुबू फैली बथौं बणी दुनिया पर।।
तेरि आख्योंन् मैं उज्यळु दिखै।
तेरि जिब्यान मैं इन्सान बणै।
तेरि सेवा कन्नौ तै मैं प्राण भि त्याग द्यों।
हर बार तेरि प्वटगी सि फिर जम्म ल्यों।

पापी पराण

✍ **चिन्मय सायर**

लद्वड़ पुटग
घुरदीं, जब
भूखक् भूख-बाघ-सी।
घुऴ जांद आदिम
अपुड़ो
आन-ईमान
जात-पात
धरम-करम.....
बस,
एक ही चीज
घूळि नि सकदु
वो
पापी पराण!

चिट्ठी

✍ **राकेश भट्ट**

कब्बि घर, कब्बि परदेष बिट्टी
कभि खट्टी त कभि मिट्टी!
कुजणि कतनै उकाल उन्दार हिट्टी
अपणों कि याद दे जांदी रिंगि रिट्टी
नौनी तै झगुळी नौना तै सिट्टी
बरखा नि ह्वे कई मैनो बिट्टी
अब ज्यादा क्य लिखण दंदोल नि मिट्टी।
चिट्ठी! कब आली मेरा पहाड़ बिट्टी।

गीत

पाणी चौछ्वड़ि पाणी

✍ मदन मोहन डुकलान

पाणी चौछ्वड़ि पाणी देखिक
आख्यूँमा सुखिगे आख्यूक पाणी
मैत अर सैसुर डुबिगे
टीरी मा डुबणि जिकुड़िक गाणो

रुके गंगा की धार, पाणी टीरी बज़ार
घन्टाघर अर रज्जा का दरबार मा
पुरखों की थाती, या जैजाद सारी
या डंड्यळि-तिबारी, समाणी च पाणी मा
तीन धारा तैं प्येगे यो पाणी
आँख्यू मा .....
परजा कि खैरि सुमन को बलिदान राला अमर अब,
इतिहास बणिगे
दरबारे धौंस अर रज्जों का ठाठ
सब राज-पाट स्यो टीरी मा डूबिगे
गीतों मा राला राज्जा-राणी
आँख्यू मा .....
रजधानी दिल्ली भोळ जगमगेळि
उजाडिकि हमारा गौं -बौण थौळ
मुखड़ि अध्यंरि करिके हमारि
बांटलो उज्याल़ो यो पाणी भोळ
जपगा लगाली तब हमारी स्याणी
आँख्यू मा .....
भ्यंटुलु त्वे भयंटुळु, कख बिटे द्यखलू
बचलू नि बचलु, अब त्वे बिगेर मी
यो जीवन च पाणी अर दुन्या बि पाणी
देखा यो पाणी, पाणी मा मीलिगी
किले आँख्यूमा सुखणू आँख्यूक पाणी
पाणी चौछ्वड़ि .....

आज को जागर

✍ नेत्र सिंह असवाल

जिकुड़ि मा जड़घण्ट-सी फरकीं छई माई!
डौंड्या त नरसिंह छायो,
डौंड्या की भी ब्वे छई माई!
बीस सूत्री किलक्वार नारैणी!
हिर्र प्वटग उँदा चाला प्वड़िगीं
कनक्वे भटगौं, कुर्सि थैंई
एक-सूत्री छई माई!
रेडु वाचा, टी० वी० वाचा,
घोर वाचा अघोर वाचा
को छ सच्चो, को छ झूठो!
फगत तेरो गुणगान माई!
संसद का चौक मा
तिल कन फ्लिट छिड़की द्याई
विपक्षी दैंत दल,
सरसु-सम सफाचट्ट माई!
बेरोजगारी कू भैरों, रांकु बाली़ऽ
धुरपली़ हलाँदऽ
मैंगै कू डौंड्या पंकाद खिचड़ी
हमरि ख्वपरि मा माई!
सहस्त्रों मनख्यूं का रक्त ला भी
त्यरो खप्पर नी भ्वर्याई,
रक्त की तिसाली़ ह्वली,
मांस की भुकाली़ माई!
घूस, हत्या, आत्महत्या, भ्रष्टाचार, बलात्कार
चली तेरी बयाल़,
पोड़ि ग्याया जाप तेरो
घपनघोर घनघोर सिमसूत माई!
नी थयेंदी माता तेरी बावन बयाल़
साइक हे जई माता दैणी हेई जई।
अपणा गीतु की ब्वे मी धुपाणी सुंघौलु
अपणा गीतु ला त्वेई, कैलासू पौंछौलू।
साइक हे जई माता, दैणी हेई जई।।

vvv

पुराणि कलम

दीवो

(इँदा पुराणि कलम मा प्रस्तुत छ गढ़वाळि का महान साहित्यकार स्व. श्री चक्रधर बहुगुणा की एक रचना वूंका कविता-संग्रह "नौबत" बटे)

दीवा! कख पिने त्वैन
अमर स्वरग पाणी?
पाये क्या जोत बतौ
मोतियों कि खाणी?

सूरज जब डूब जांद
अन्धकार खूब छांद,
तेरा मुख जोत भाँद
डल़-बल़ाद पाणी।।

बाल़ी क देह आप
फैलौंदी तू प्रताप
तेरी जग बीच छाप
बणी रहण आणी।।

बत्ती जो बणद एक
वह कबास भी छ नेक
धुणियां कद भिन्न जैक
फट्यैं देंद ताणी।।

तेरो वह तेल मीत
साथ देंद जो पुनीत
पैले तप कै अफ्वीत
पिसे जांद घाणी ।।

दीवो बणदी लुटेक
मार खैक औ पिटेक
भट्टी चढ़िकी फुकेक
क्वसड़ि या निमाणी ।।

पण्डित की होंद शान
देवतौं का ठांव मान
राजौं का घर गुमान
दिवा त्वै पछाणी।।

जखमां दुख बुस्यै जांद
चमत्कार नयो लांद
गाणी पनपेंद जांद
सिद्ध होंदि धाणी ।।

घर को उद्योत कोत!
को हुलास को छ सोत
माला को चम्म पोत
तू, कि घर की राणी?

मारो क्या क्वीन छील
तेरो गुणा ई छ शील
ढूँडा क्यां कू दलील
देश मुलक छाणी?

तप को ज्यूंदो प्रभाव
पुण्य की छ पुलक आव
दीवा की लौ कि ताव
त्याग की निशाणी ।।

दीवा क्या पिने त्वैन
अमर स्वरग पाणी
पाये क्या जोत बतौ
मोतियों कि खाणी?

साक्षात्कार

मैं यान्त्रिक युग को पैलो गढ़वाळी गायक छौं : जीतसिंह नेगी

(कुछ दिन पैलि साहित्य अर संस्कृति की वर्तमान स्थिति का सम्बन्ध मा गढ़वाळि का वरिष्ट गीतकार श्री जीत सिंह नेगी जी दगड़ "हमारि चिट्ठी" की बा. तचीत ह्वे। बातचीत का प्रमुख अंश हम साक्षात्कार का रूप मा प्रस्तुत कर्ना छां। "हमारि चिट्ठी" की तरफ बटे नेगी जी दगड़ बातचित कर्ना छन - आशीष

आ सु. - आप बरसु बटे गढ़वाळि साहित्य, समाज अर संस्कृति का वास्ता काम कर्ना छन। आपै या साहित्यिक सांस्कृतिक जात्रा कब अर कन मा शुरु ह्वे।

जी. सि. ने.- शुरु मा जब मैं बर्मा मा छौ-मैं हिन्दी फिल्मों का गीत सुणदो छौ। के.एल. सहगल आदि का रागों पर आधारित गीत मैं तै पसन्द छया पर जब मैं संगीत सिखणा वास्ता बम्बई मा एक गुरु का पास गौं त वून मैं तैं अपणा इलाका वास्ता काम कर्ने सलाह दिने वूंको ब्वनो छौ कि हिन्दी मा त भोल तुम एक जुगनू की तरौ चमकिल्या पर अपणा इलाका का वास्ता काम करिल्या त चाँद जना चमकी कै सैरा मुलक तै करदा छा पर जब सन १९४९ मा मैंन गढ़वाळि गीत गाणा शुरु कैन वे समै पर एक तरा से यान्त्रिक युग की शुरुवात ह्वेगे छयी अर गीत/संगीत का प्रोग्राम ग्रामोफोन रिकार्ड का माध्यम से समाज का बीच पौछण लगीन! मैं से पैलि हिन्दी अर अँग्रेज़ी मा त यो काम शुरू ह्वेगे छौ पर गढ़वाळि गीतों को पैलो ग्रामोफोन रिकार्ड मेरा गयां गीतों को बणे आप यो बोळि सकदां कि मैं यान्त्रिक युग को पैलो गढ़वाळि गायक छौं।

आ. सु. आप लम्बा समै से गढ़वाळि समाज का वास्ता काम कर्ना छन येकी प्रेरणा आप तै कख बिटे मिले।

जी.सि.ने- मैं तैं काम कर्ने प्ररेणा मेरा समाज से हि मिले

गढ़वाळि साहित्य समाज अर संस्कृति का मर्मज्ञ वरिष्ठ लोक गायक श्री जीत सिंह नेगी को जन्म 2 फरवरी 1927 खुणै ग्राम– अयाळ, पट्टी– पैडुळस्यूँ, पौडी गढ़वाल मा ह्वे। नेगी जी बचपन मा ही अपणा पितजी श्री सुल्तान सिंह नेगी, जो ब्रिटिश फौज मा छा– का दगड बर्मा चल गैन प्रारम्भिक शिक्षा बर्मा मा ही ह्वे वेका बाद डी.ए.वी. हाईस्कूल पौड़ी गढ़वाल अर डी.ए.वी. कॉलेज देहरादून बटे नेगी जी न अपणि अगनै पढै लिखै पूरी करे। नेगी जी न अपणा साहित्यिक जीवन की शुरूवात सन 1942 मा पौड़ी मा नाटक–मंचों से स्वरचित गढ़वाळि गीतों का सस्वर पाठ से करे। येका बाद सन् 1949 मा यंग इण्डिया ग्रामोफोन कम्पनी, बम्बई बटे छः गढ़वाळि गीतों की रिकार्डिंग से नेगी जी का साहित्यिक जीवन की मजबूत पौ पडे। श्री जीत सिंह नेगी न गढ़वाळि गीतों का अलावा गीत–नाटक, एकाँकी नाटक आंदि की भी रचना करे। नेगी जी की प्रकाशित रचनाओं मा गीत–गंगा (गीत संग्रह) जौळ–मंगरी (गीत संग्रह) छम घुंघुरू बाजला (गीत संग्रह), मलेथा की कूल (ऐतिहासिक गीत नाटक), अर भारी भूल, (सामायिक नाटक) प्रमुख छन जबकि जीतू बगड्वाल (एतिहासिक गीत नाटक), राजू पोस्टमैन (एकांकी) अर रामी (गीत नाटिका) अबि भि प्रकाशन को बाटो ह्यरणा छान श्री जीत सिंह नेगी जी का नाटक भारी भूल, मलेथा की कूल, जीतू बगड़वाल, रामी, राजू पोस्टमैन भौत लोकप्रिय ह्वीन् अर यूँ नाटकों को कतनै जगा अर कतनै बार मंचन ह्वे।

गढ़वाळि गीत–संगीत अर साहित्य–संस्कृति का ठुल्ला रागजग्वल्या तै गढ़वाळि समाज न भि भरपूर सम्मान दे अर अखिल गढ़वाल सभा देहरादून हिमालय कला संगम देहरादून, गढ़वाल भ्रातृ मण्डल बम्बई, उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी लखनऊ, नागरिक

रोशन करि सकदा। बस! तब बटि मैं अपणा गढ़वाळि समाज का वास्ता का काम कर्न बैठिग्यों।

आ. सु. - जब आप न शुरू-शुरू मा गढ़वाळि गीत गैनि, वे दौर का बारम कुछ बतावा

जी. सि. ने. - पैलि सरया संसार मा सांस्कृतिक/ साहित्यिक लोग अपणी कला को प्रदर्शन राज घरानों मा आयोजित कार्यक्रमों मा, बड़ी-बड़ी महफिलों मा या थौळ मेला आदि माध्यमों से कला-साहित्य प्रेमी मैं दगड जुर्डीन् मैं से सिखण लगींन् त मैं न एक टीम बणै दे अर फेर लोकगीतों/लोकनृत्यों का कतनै रूपों जनकि थड्या, चौंफळा, जागर आदि तैं एक दगड् गच्छैकि गीत नाटिका, नृत्य नाटिका का रूप मा प्रस्तुत करे। गढ़वाळि समाज का लोगुन याँकी भरपूर सराहना करे। मलेथा की कूल, जीतू बगड़वाल, रामी जना गीत-नाटकों को कतनैं जगा अर कतनै बार मंचन ह्वे।

आ. सु. -आपै साहित्यिक/सांस्कृतिक जीवन से जुड़ी क्वी ख्वास

घटना जैको आप यख मा जिक्र कर्न चाँदा।

जी. सि. ने. –: हाँ। एक बार मैं बम्बई मा अपणा गढ़वाळि लोगों का बीच गीत लगाणू छौ–सौण भादौं का बादल सूणा, बरखा नि कर्यां मिल मैत जाणा–ये गीत मा एक नौनी को जिक्र छ जो सासु का अत्याचार सैणी रैंद–ये गीत सूणी कै एक बुड्या जोर–जोर से सब्यों समणि रूण बैठिगे, मैं न अपणी हारमोनियम रोके पर सब ब्वन लगीं गावा–गावा त मैं फेर गाण बैठिग्यूं पर प्रोग्राम खतम हूणा बाद मैंन वे बुढ्या तै पूछी कि तूम किलै रूण लग्यां त वेन बोले कि मेरी एक नौनी छयी जैन सासु का अत्याचार से तंग आके गाड़ फाळ मारि दे। अर तब बटि मैं आज तैं घौर नि गैं। वे बुढ्या की या घटना मैंतै आज भि याद छ।

आ. सु. – आप का शुरूवाती समै का गढ़वाळि गीत – संगीत अर आज का गढ़वाळि गीत–संगीत मा क्या फरक छ?

जी.सि.ने– वे समै का मेरा गीत सीधा लोक जीवन से सम्बन्ध रखदा छा जबकि आज का गढ़वाळि गीतों को यों चीजों से क्वी सम्बन्ध नी छ पर यामा सिरप कलाकार को कसूर नी छ लिखण ो त वो भि मनोरंजक गीत हि छ पर ग्हरै मा नि जाणो छ किलैकि वो गढ़वाळ की मिट्टी से परिचित नी छ अर फिर श्रोता भि इन्नी छन। गढ़वाळ का लोक जीवन का बार म् कै तैं भि कुछ खास पता नी छ।

आ.सु. – आज बजार मा गढ़वाळि सी.डी. वीडियो एल्बम आदि की भीड़ लगीं छ ये विषय मा आप क्य ब्वलिल्या?

जी.से.ने.– ये सी.डी., एल्बम बणाण वळा सिरप व्यापारिक अर व्यवसायिक दृष्टि से काम कर्ना छन पर याँ से चला कुछ श्रोता त बढ़णा छन। लोग गढ़वाळ से दूर रैकि भि गढ़वाळि तैं सुणणा त छन पर यख मा हमारा लोककलाकारों की जिम्मेदारी छ कि वो अपणा लोकगीत/संगीत का मूल रूप तैं बचैकि रखीन् अर ठेट गढ़वाळि चाल ढाल अर शब्द श्रृंगार से अपणा गीतों तैं सज्येन्।

आ.सु. – आपन 'मेरी प्यारी बोई', 'समौण' आदि गढ़वाळि फिल्मों मा भि गीत लेखन करे यो अनुभव कनो रै?

जी.सि.ने– 'मेरी प्यारी बोई' सुन्दर फिल्म बर्णी छ पर आज सिनेमा हॉल मा दर्शक कम छन, सी.डी. को प्रचलन जादा छ पर लोगुंन मेरा लिख्यां गीत पसन्द कैनि अर निर्देशक मेरा गीतों से बिल्कुल सन्तुष्ट छ।

आ.सु. – आज गढ़वाळि रंगमंच की क्य स्थिति छ?

जी.सि.ने. – आज गढ़वाळि रंगमंच फीको पडिगै। न त आज मंच पर काम कर्न वळा कर्मठ कलाकार रैग्या अर न वूँ मा क्वी लोकजीवन से जुड्याँ खास विषय छन। रंगकर्मी जमना का हिसाब से अपणा आप तै नि ढाळि सका।

आ.सु. – आज वरिष्ठ साहित्यकार/गीतकारों मा आपौ नौ सबसे ऐंच छ ये मुकाम पर पौंछी आप तैं कन लगद?

जी.सि.ने.– मैं तैं मेरा समाज से भौत प्यार मिले सम्मान मिले आज भि भला कामों मा मैं तै पूछे जाँद कतनै जगा मैं कार्यक्रमों मा निर्णायक का रूप मा शामिल हूँ। बम्बई की जनता न् मैं तैं गढ़रत्न को सम्मान दिने, यो सब देखी बड़ि खुशि होंद अर काम कर्ना खुणे ऊर्जा मिलद।

आ.सु.– एक बबाल अजगाल गढ़वाळि लिपि तैं ल्हेकि मच्यूं छ ये विषय मा आपा क्य विचार छन?

जी.सि.ने. – गढ़वाळि की अलग लिपि की बात कर्नो बिल्कुल बकबास छ। याँ से गढ़वाळि भाषा बोली तैं समझण–लिखण–पढ़ण हौरि भि मुश्किल ह्वे जालो। हम तै अलग लिपि की क्वी जरूरत नी छ देवनागरी लिपि मा हि गढ़वाळि लेखन को काम हूणो रै अर हूणो रालो।

आ.सु. – नै छ्वाळी का वास्ता आपौ क्य रैबार छ?

जी.सि.ने. – नै छ्वाली का कलाकारों तैं गौं–गौं मा जैकि पहाड की लोक संस्कृति का वूं जणगुरुं जौंका पास लोक साहित्य को बिजां भण्डार छ अर धीरे–धीरे वो विलुप्त हूणो छ इना लोगु का बीच जैकि लोक जीवन अर लोक तत्व तै बिटोळी कै लोक गीतों की रचना कर्न चयेंद। सिरप यख बैठिकि सी.डी.– कैसटों मा देखिकै पहाड़ को वर्णन नि करीन्।

vvv

व्यंग

बीच - बीचा

✍ **नरेन्द्र कठैत**

'सीख' पर आज तलक भौत बहस बाजी ह्वेगे। कैन बोलि सीख बिना ठोकर लग्यां नि मिल्दी। मन मा य बात उठी कि पैली ठोकर कै पर लगी होली। देब्तौं पर कि रागसू पर?

हमुन् अंदाज लगाई कि रस्ता चल्द-चल्द ढूँगें ठोकर पैली एक मन्खी पर लगी होली। अगर वेका पैथर तै रस्तम् वेकू क्वी खास आणू रै होलु त वेन वे तैं चितळू करी होलू। पर अगर पैथर क्वी दुश्मन हिटणू रै होलू त वेन किनरा पर लूकी वे पर ठोकर लगदी वेकी पीड़ै बबराट पर थूक घूटी टपकरा ल्हे होला।

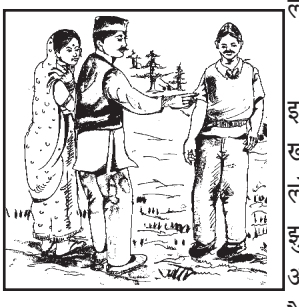

ठोकर लगणा बाद वेका दुश्मन न पीड़ा कम होन्द तक ढूँगा रखदरा चटेली गाळि दे होली। अगर वु ठोकर खन्दरू थुड़ा चकड़ैत रै होलु त वेन सैळी पोड़दी वी ढूंगू रस्ता बीचों-बीच धार दे होलु। इखी बटिन देब्ता अर रागसा लक्षण गैरा तक मन्ख्या घटप्यन्नम् बैठी होला। इन मेरो दिमाग मा भिज्यूं च।

फिर मार-फौंदरी ह्वे कभी देब्ता पिटेन कभी रागस। तीर-तलवार-त्रिशूल, गजमुंगरौन पुराण भुर्‌यॉ छन। इखमी एक फुन्द्या देब्तौं अर रागस्वा बीच मा कूदी। वेन दुयूं मा अलग-अलग खुफसाट करी - मी तुम तैं जितणैं तरकीब बतौलु। तरकीब सुणदी पैली वेका पैथर-पैथर एक जंगल मा गै। तैन तरकीब सीखी। तैन बाणन् शब्द भेदण शुरू करनी। आंखा बूजी सुदी हवा मा तीर चले त नुकसान त कखी न कखी होण्वी छौ। श्रवण कुमारा ब्वे-बुबा तिसळा त छुटी छन् पर मवशी भी घाम लगी। ब्वे-बुबा एकी जगा मा बैठया रै गैनी। तीर चलन्दा बड़ा आदिम छा। तौंकू न गौं फॉटी ह्वे न पणछ्यूंदूँ। लिखदरौन् इन लिखी जन कि क्वी बड़ी बात नि ह्वे हो।

तरकीब सिखदरा मन्खी बढ़नी त तैन उड्यार बटिन भैर ऐकी छप्पर डाळ दे। एक छप्पर छुटू ह्वे, त एका द्वी, द्व ी का चार ह्वेनी। जंगल-जंगल छप्परून् भरे गेनी। कखी-कखी कीलों पर बाँधी दुधाळ गौड़ी रमण बैठ गेनी। भ्यार गाळी-मगाळी मार-काट मचीं छै, उनै वू जंगल मा या डिसणा मा सियां छा। जै डाळा छैल बैठ्यां छा वे का फौंका हिलैकी फल, फूल अर लखड़ा टिपणॉ रैनीं

अब सुणा ! द्रोणाचार्य नौ का एक इनी छप्पर वळा छा। तौंकी संगत-सौबत ऊँचा खानदनू तक छै। तौंका छप्पर तौळ खानदनी लोग्वा हीरा-मोती हैंसण-कुदणा छा। द्रोणाचार्य तैं झुमल्या-तुम्ल्या बिल्कुल पसन्द नि छा। एकलब्यन आसीरबाद माँगी पर द्रोणाचार्यन अपणा खुट्टा पैथर खैंच देनी। एकलब्य लैकबन्द छौ बिचरन अपणा हाथ खुट्टा चलाण नि छोड़नी। बिना गुरू कु मास्टर बण्द भी लोगुन पैली दा सूणी।

खानदान्यूं कु कुकुर भी तबरी जंगल मा अकड़ी चल्दू छौ। शेर बाग भी तै देखी डरदा छा। गूणी बान्दर्‌वी त औकात ही क्य छै ! पर जब स्यू कुकुर खबड़ा पर तीर फॅसे की क्यूँकांद-क्यूँकांद तौंका छप्पर तौळ पौंछी, त खानदान्यू दगड़ा द्रोण ाचार्य भी खबड़ा-कताड़ी हक्का-बक्का रै गेनी। अर्जुना तमगा पर मूजा पड़ गेनी। जैकी छत्ती पर धनुर्धर्या तमगा लगण छा वू भी तै ही जंगल मा भटकुणू छौ। वेका बाद द्रोणाचार्यन् क्य तिकड़म चली सेरी दुन्या तैं पता च। पर कैदा त यू बोल्दू कि कैकू गौळू काटा, हाथ काटा चा अॅगुलु। जुर्म त छईं छौ।

हमरी सी बात होंदी त, हुक्का-पाणि बन्द करी द्रोण ाचार्य तैं इखमी छोड़ देंन्दा। कि भै! तू जा अपणू महाभारत अफी लिखली। पर ब्यास पौंछी चीज छा। द्रोणाचार्य तनी फँसदी रैनी। कैन सुदी हवा मा चले दे कि द्रोणाचार्यो नौनू भीड़ मा हर्ची गी। बस फिर क्य छौ बीचा द्रोणाचार्यन् ऐन-मौका पर

हाथ खुटा छोड़ देनी। तिमला-तिमला भी खतेनी अर नग्या-नंगी भी दिखेनी।

भयू ! ई तरकीब बतलन्दरा नि होंन्दा, त नत, रामचन्द्र जी जंगलू मा भटकदा, न सीता चुरेन्दी, न वे जमना मा समोदर मा पुळ बणाणै जरोरत पड़दी। राबण जनू विद्वान आदिम भी नि मरेन्दू। कंस तैं अगर क्वी उल्टी-सीधी छूवीं नि सुणादू त एकी राश्या ममा-भंणजा दुश्मन भी नि बणदा। सकुनी जनू बिचो आदिम नि होन्दू त कुटुम्ब मा महाभारत नि जुटदू। यू बीचा नि होन्दा त भिष्म तैं बुढ़ेन्दी दां नुकीला बाण्वा डिसाण मा पराण त्यचागण पड़दा? धृतराष्ट्र जना अन्धा आदिम तैं बीचों आदिम पूरू महाभारत बिगैंगी। तरकीब सीखी त्रिशँकु बीच असमान मा फँस्यूं च। साख्यूं बटिन बीचा हमतैं इनी लसोड़णॉ छन। अर हम अभी भी तरकीब सिखणू बीचा खुजाणा छा।

आज भी छप्पर वळों की रूटी-पाणी मा क्वी अन्तर नि आई। जब चकड़ैत्वा रौ-भौ देखी जंगल मा स्यू गौर-बछरा पळण वळा अपणा हाथु पर मौळे गन्ध चिताण बैठ गेनी। त गौड़ी बेची तौंन घोड़ा बाँधी। दूध, पाणी, साग-भुज्यूं जिम्मा गारजन्वा मथी पड़गी। जैन तैं तरफाँ बटिन मुख मोड़ी वेका नौनो का औलणों का चट्टा लग गेनी।

ब्वे-बुबान बोली मास्टर जी ! छोरा अगर पढ़े पर ध्यान नि देणान् त तौंका कमर तोड़ द्या। कमर त कैका नि टूटनी। पर तौंने असन्द जरूर गाड़ दे। भिमळे सुटगी टुटण बैठनी। छोरोन कूंणा-कुमच्यरों, डाळि-बोट्यूं का पैथर लुकुण शुरू करी। कुछुन् ईं मुसीबत से बढ़िया भाभर उन्द होटलु मा भांडा मंजाण सै समझिनी। जब गुण्यॉ कपाल मा कुटुळजड़े लगी अर ल्वे का धारोन बरमण्ड भीगी बुद्धि हर्ची। तब जैकी ब्वे-बुबौन बोली भै! औरी धणी त फुण्ड फुका। नौनौ इथा नि मारा तुमरी पढ़े-लिखे जावु रगड़्घूस मा। हमरा लाड प्यारा छोरा छन। बच्याँ राला त गोर चराला।

कुछ दिन तक तौंन माटू बुखेकी तकळी चलै। विद्या तक्द-तक्द तकली पर जब तनख्वा अर घरगिरस्थ्यू जंजाळ अल्जी, त विद्यास धागा पर खैड़ा, लत्ती, चबत्ति, कंडल्या झमाझ्याटे गेड़ी पड़ गेनी। गार्‍या कपाल मा पैली एक खैड़े लगी फिर पूछी बतौ रामा बुबो नौ क्य छौ? ऐथर-पैथर मारन् गारी सब भूलगी। स्यू जग-बक कन लगी। फिर एक चबऽति लग की पूछी सोर का बच्चा तेरा बुबो नौ क्य च? रोन्द-रोन्द गारिन बोली -दशरथ ! पर हम तैं पता च तैका बुबो नौ भूलगी। जू हाल यून उबरी एकलब्या कनी वी हाल ब्याळि गुण्यॉ छा आज गार्‍या भि वी हाल होणा छन।

vvv

दीपावली अर
ईद की शुभकामनाओं का दगड़

हँसाज रे
रैन्ट

राजेन्द्र नगर, बी.एस. नेगी मार्ग
कौलागढ़ रोड, देहरादून

घळचाघण्ड

✍ **प्रीतम अपछ्याण**

प्राईमरि स्कूल मा प्रार्थना होणी छै। मास्टर जि अैथर खड़ा छा अर भैनजि नौनों का पिछनै। जनि दैनिक प्रतिज्ञा निम्ड़े एक नौनान् नारा लगाये -भारत माता की, सबून बोलि झै। वे का गिचान् भारत त साफ बिंगे नी- भात माता की झै। बगल कि क्वठड़ि बटे एक जनानि आँखा मिरोड़द मिरोड़द भैर अै अर बोलि -भैनजि, आपन् मी थैं बुलै क्या? इ नौना क्य बोना भात माता का गै? वा जनानि स्कूलम् भात पकौंण वलि छ। सब वीं कु भात माता बोल्दा छा। गुरूजी अर भैनजि हैंसण बैठ्या। जनानिन् ज्य सम्झि हो, तड़म तीड़िगे।

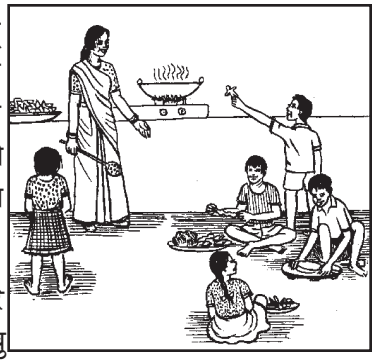

अरे यूं निरभै छोरों का खातर बिनसिरि बटे तकुळि सि रिटणू छौं। लखड़ा ल्याई, वु बि धुवाण्यां। धुवान् आँखा लाल ह्वेगिन। फुर्र फुर्र फूक मारीक मेरि फूक सर्किगे। चुल्लु द्याखा रोज भिचोळ देणा छन। खचबच कबि एक ढुंगु रड़े अर फुल्टु टम टोठगो। यों खड्यौणों पोटगि चिरणू मेनत से पकाओ। चौंळू का बिंया बिराओ, दाळ का कंकर छंट्याओ। पाणि सारो, खंदि लखड़ा घोचो अर निहोण्यां मेर्वी ठठा लगौणा। इ गुरुजी अर भैनजि, लाज न सरम। नौंनो थैं डपकौंणु छोड़ीक ही ही ही दाँत दिखौणा छन। सड्यां चौंळ मंगै कि भात पकौणा। दाळ कि जगा छंछ्या खिलौणा अर मेरु क्य फैदा? चार सौ रुप्या दस खुशामद करीक बि टैम पर नी। मैना भर खिलौणा बाद बि साब-साब कन्न पोड़नू च। यि निर्गुसैं का छोरा न्यक्क औंदन अबि कतगा देर च। भात माता भूक लगे। गुरुजी थैं बीड़ि पेंण से फुर्सत नी अर भैनजि थैं स्वेटर बुण्ण से। क्वी कखि थकुलि बजौणू क्वी हग-मूत देणू। अर देखो त मेरु ठठा। क्य छौं मि क्य छौं? इन नि बोल्यां मि थैं कुछ नि पता।

मास्टर अर भैनजि कि घळचाघण्ड। नौना डौरन् बड़ि मुश्किल से समझाये-यि त अण्णा देश कि भारत कि जै जैकार कन्ना छा। आप थैं कैन कुछ नि बोले। हमारि तरफाल जनि भारत माता उनि भात माता। दुये हम थैं खिलौंणा छन अर

ईद व दिवाली की
शुभकामनाओं सहित

आरजू हेयर कटिंग सैचून

लाडपुर, रायपुर रोड, देहरादून

इथैं-उथैं

मुंबई मा गढ़वळि रंगमंच

✍ गजेन्द्र नौटियाल/ दिनेश भारद्वाज

मुबई महानगर मा पैलि पारसी रंगमंच (थियेटर) भौत चढ़्यू-बढ़यूं छौ अर अब मराठी अर गुजरति रंगमंच अपरु यौवन पर छ।

ये महानगर मा गढ़वळि रंगमंच की स्थापना बहुत कठण काम च। फिर भी मुबई मा गढ़वळि रंगमंच की शुरुआत १९६२-६३ मा गढ़वाळ भ्रातृ मण्डल द्वारा एकांकी नाटक द्व ारा करे गे जै का लेखक (स्व.) दीनबंधु द्विवेदी छा। तै का बाद १९६५-६६ मा गढ़वाल भ्रातृ सम्मेलन (मुंबई) द्वारा और एंकाकी कू मंचन करै गे जैका लेखक (स्व.) जगदीश प्रसाद बलोदी छा अर ये एकांकी कू नौ छाय "गुलदस्ता" जै मा राष्ट्रीय एकीकरण की भावना छै।

१९६०-१९७० का दशक मा ललित मोहन थपलियाल द्व ारा रचित 'खाडू लापत्ता' का कम से कम आठ बार मंचन करे गै अर हर बात दर्शकू ल ये की सरहाना करे। ये का दगडि ललित मोहन थपलियाल द्वारा रचित "घर जवैं" अर "एकीकरण" कू भी मुंबई मा सफल मंचन गढ़वाल भ्रातृ मण्डल का तत्वाधान मा करे गे।

१९७३-७४ मा अलकनंदा का बैनर मा राजेन्द्र धस्माना द्व ारा लिखित "अर्धग्रामेश्वर" नाटक कू मंचन दिल्ली की कलामंडली द्वारा करे गै जो हर दृष्टि से उत्कृष्ट नाटक छौ।

१९७५-७६ मा स्वरुप ढ़ौडियाल द्वारा रचित "अदालत" अर "मंगतू बौल्या" कू मंचन भी मुंबई मा ह्वे। यूं कू कथ्य अर पृष्ठभूमि पूरी तौर पर गढ़वाल पर आधारित छौ। यों द्वी नाटकों की प्रस्तुति भी दिल्ली का कलाकारु द्वारा करे गे।

१९७५-७६ मा गढ़वाल़ भ्रातृ मण्डल द्वारा स्थानीय युवा-युवतियों की कला शाखा कू गठन करे गै जै मा सबसे बड़ो योगदान (स्व.) भुवनेश्वर जुयाल अर (स्व.) भगवान सिंह रावत कू छौ। यीं कलाशाखन ललित मोहन थपलियाल जी कू एकांकी घर-जवैं कू मंचन करे। ये का निर्देशक भुवनेश्वर जुयाल छा अर मुख्य भूमिका मा दिनेश भारद्वाज अर सरोज बिष्ट छा। उत्तरांखण्ड जन-कल्याण परिषद् द्वारा भी मुंबई मा" मलेथा की कूल" कू मंचन करै गे जै का लेखक जीत सिंह नेगी छन।

१९८९ मा गढ़वाल भ्रातृ मण्डल न् "तीलू रौतेली" नृत्य नाटिका कू सफल मंचन प्रसिद्ध सम्पूर्णानंद सभागृह मा करै। "तीलू रौंतेली" की नाटकीकरण और गीत संवाद् की रचना दिनेश भारद्वाज न करै। नृत्य नाटिका कू निर्देशन भी दिनेश भारद्वाज अर उम्मेद सिंह बिष्ट न करै। करीब ४० कलाकारु द्वारा प्रस्तुत य नृत्य नाटिका मण्डल का इतिहास मा सफलत मंचन च।

१९८९ मा दिनेश भारद्वाज अर उम्मेद सिंह बिष्ट न "पलायन" नामक नाटक की रचना करे जो पहाडू से युवाओं कू पलायन पर आधारित च। गढ़वाल भ्रातृ मण्डल मुंबई न ये कू प्रस्तुती करण करे अर निर्देशक छा उम्मेद सिंह बिष्ट।

गढ़वाल़ छात्र संघ मुंबई न भी अनेक एकांकियों की प्रस्तुति करे जै मा "बुढ़्या लापता" प्रमुख च। यो मूलतः मराठी नाटक कू गढ़वलि रुपांतर च जो दिनेश भारद्वाज अर रमणमोहन कुकरेती न करै।

२००१-०१ मा एक दूसरो एंकाकी "मुरखत्या बुढ़या" कू मंचन गढ़वाल कला केन्द्र, जोगेश्वरी, मुंबई द्वारा करे गै। ये एकांकी का लेखक निर्देशक महाबीर सिंह बिष्ट छन। नाटक पूरी तरौ आधुनिक संस्कृति और गढ़वाल की पृष्ठभूमि पर व्यग्यं च। दर्शकू न यो नाटक बहुत पसंद करै।

मुंबई कू व्यापक क्षेत्र, व्यस्त जीवन का कारण अर नाटकों का प्रति समर्पित कला मंडलियों की कमी का कारण मुंबई कू रंगमंच ज्यादातर एंकाकियों तक ही सीमित रै गै। गढ़वळि़ रंगमंच तै समर्पित गढ़वळि़ कलाकारु और रंगमंच-संस्थौं की जग्वाल च।

vvv

साहित्य

बागी उप्पन की लड़ै

(गढ़वाळि साहित्य का मूर्धन्य कवि कन्हैयालाल डंडरियाल जी की कतनै उत्कृष्ट रचनाओं मा बटे एक कृति छ - "बागी उप्पन की लड़ै"। तंगतंगा हालतुं का चलदा य रचना अभि तक अप्रकाशित छ। या उत्कृष्ट रचना लोगों का समणि आवा यीं कोशिश मा यीं कृति तैं हम श्रृंखलाओं मा प्रकाशित कर्ना छां - सं.)

गतांक बटे अगनैः-

कबी पंखु की झपट मारि की,
बागी तैं कै द्यो बेहोश।
जब तै सिंग रिंगावा बागी,
थप्पड़ उप्पन ल्हौ कै रोष।

बागी तै तब ग्वस्सा ऐ गै,
करि दे पूछ न मारइ मार।
पूछ रिंगै कै मार उप्पन फर,
झपगा ठोकि देन द्वी चार।

पंख टुटी गै तब उप्पन का,
ल्वै का छंछड़ा तब लगि गैन।
कतगै डाळा बोटा कूड़ा,
बोगी ल्वै की धारम् गैन।

मन चित दृढ़ कैरी उप्पन ना,
डाँग हाथ मा ल्यई उठाय।
मारी सिस्त लगै कै बागिदं,
और जोर से गरजी ग्याय।

भड़ उप्पन की गिरजाण से तब,
रौल्यूँ पड़ि गै भारी गाज।
थर्रट मचि गै तीन जोक मा,
सैत म प्रलय हून्दा आज।।

बाघ अटिगि गै रिक अटिगि गैं,
हाथी झसगी गैंडा भाज।
कौबौ लगि गैं बबर शेरू तै,
गर्म शेरजी गिरि गै आज।।

करफ्यू लगि गै भग्गी पड़ि गै,
सैरा देश मुल्क का बीच।
अपणी अपणी पड़ी सब्यूँ तै,
कै की सुधी कथी रै नी च।।

शेर लुकी गैं घिडुड़ी घोलम,
सुरड़ी शेर, गुफौ लुकि गैन।
रिक लुकी गैं मुसडुन्डयूँ मा,
मूसा उतणढ़ण्ड ह्वै गैन।।

बादँर गूणी गैं ढडयूँ मा,
माछा डालौं मा चलि गैन।
बिरला ढाडू ट्वटगा ह्वै गैं,
कुकर रूस्वड़ौं मा चलि गैन।।

बागि न रोके डाँग सिंगू मा,
और उप्पन फर झपटी ग्याय।
भटगा पड़ि गैं द्वी ज्वानू मा,
भारी जबर लड़ै मचि ग्याय।।

हार कबी खै जावा उप्पन,
कभी बागि खै जावा मात।
लड़दा लड़दा हुई इनी मा,
पूरा नौ दिन अर नौ रात।।

कतनै गैरी खाड खणे गै,
खुटौ नै धरती का बीच।
पसिना इतना छुटा लड़ै मा,
घुंडु घुंडु की मचि ग्याया कीच।।

कड़गच कड़गच डाला टुटि गैं,
फुटि गै भारी भारी पोड़।
भीड़ा उजड़ी, ढैया टुटि गैं,
मची लड़ाई छै जै छोड़।।

धरपट्टौ गदना ह्वै गैं,
अर गदनौ मा ह्वै गैं घार।
भेळू का वख सैणा बणि गैं,
अर सैणौ का भेळ भंगार।।

जनी लड़ाई कैन अभी तै,
देखी और सुणी बी नी च।
मची लड़ाई इना जोर की
बागी और उपन का बीच।।

vvv

चखन्यौ

र्यखड़ा

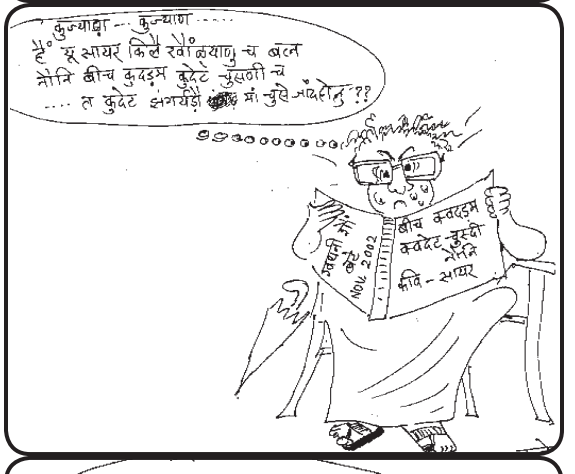

पण मेरी द्वे त बोल्दी है
जन बुलालि तनि इ लैली
क्या सोचि छौ क्या ह्वाइ
क्या बूति छौ क्या लाई
कवि - मदन डुकलाण
रचनासमें - NOV2002
खबोड़ मां -
NOV.2003

द लगा बल सुगरू दगड़ मांगळ!
इरव परदेश मां रोज एक क्वाटर
पीणो बान तनरवा पुगद्री इ नी च,
अर यू गणेश गणी बोलणु बल चूंदे
कूड़ चिणनो गढ़वाळ आवो
NOV 2002

कुज्याणा --- कुज्याण .....
हैं यू सायर किलै रवांळ्याणु च बल
नौनि बीच कुदड़म कुदेट चुसणी च
.... त कुदेट झगर्यड़ौ मां चुसे अंदहोनु ??
बीच क्वदड़म
क्वदेट चुसदी
नौनि
कवि - सायर
NOV. 2002

हां रिसि मुनि तरसणा त अबि बि छन
अब पौल्यूसन फ्री गढ़भूमि का बान
तरसणा छन
जय देव भूमि
जय देवभूमि प्यारी गढ़भूमि
त्यारा बाना तरसीन
सदानि रिसि मुनि.
जय देव भूमि
कवियत्री - कवियित्री
- नीता कुकरेती
रचना काल - Nov. 2002

हैं गढ़वाळ मां इनफौर्मेशन टेक्नोलोजी ल
इथगा तरक्की करी याल कि बळिंडा,
द्वार-म्वार बि बुलण बिसे गेन ...!
अब त गढ़वाळ बौड़नो समौ ऐ ग्ये
क्वरा बळिंडा
द्वार - मोर
बोड़ किवाड़
शरीर सिंगाड़
कुध बवना छन
कवि - आशीष सुंदरियाल

सर। खुशखबरी
बाराबंकी मां गधों की
तादाद जादा हैन त केंद्रीय
राहत कोष से 5000 गधा
उत्तरांचल मां भिज्याणा
छन ...।
मंत्री
उत्तरांचल सरकार

विशिष्ट सदस्य

◆ विजय धस्माना, जौली ग्राण्ट, देहरादून ◆ विरेन्द्र मोहन उनियाल, देहरादून
◆ अनिल मखलोगा

आजीवन सदस्य

सर्वश्री

1. रणवीर सिंह बुटोला, नई दिल्ली
2. उदय षंकर भट्ट, देहरादून
3. दिनेष जोषी, देहरादून
4. धीरेन्द्र देव सेमवाल, देहरादून
5. बुद्धि वल्लभ थपलियाल, देहरादून
6. हर्शमणी व्यास, देहरादून
7. सुरेन्द्र अग्रवाल, देहरादून
8. अरूण कुमार ढौंडियाल, देहरादून
9. बृजमोहन षर्मा, देहरादून
10. रविन्द्र सिंह नेगी, देहरादून
11. वीणा पाणी जोषी, देहरादून
12. आर.के. बहुगुणा, देहरादून
13. हेमवती नन्दन कुकरेती, देहरादून
14. एम.एस. पुण्डीर, देहरादून
15. एस.पी. ममगांई, देहरादून
16. सरस्वती गैरोला,ओ.एन.जी.सी.देहरादून
17. चन्द्रवीर सिंह नेगी, देहरादून
18. विजय सिंह नेगी, देहरादून
19. चित्रा रावत, देहरादून
20. एच.सी. जोषी, देहरादून
21. षिव प्रसाद उनियाल, देहरादून
22. त्रिलोक चन्द्र, देहरादून
23. किषोर कुमार, देहरादून
24. उमाकान्त डबराल, देहरादून
25. वी.पी. उनियाल ओ.एन.जी.सी, देहरादून
26. विरेन्द्र असवाल, देहरादून
27. वी.एस. पंवार, देहरादून
28. जे.एस. बुटोला, देहरादून
29. आर.पी. डोभाल, देहरादून
30. कुटज भारती, पौड़ी गढ़वाल
31. सर्वेष्वर प्रसाद सुन्दरियाल, पौड़ी गढ़वाल
32. प्रदीप सुन्दरियाल, पौड़ी गढ़वाल
33. भगवती प्रसाद नौटियाल, नई दिल्ली
34. संजय कुंडलिया, देहरादून
35. बृजमोहन षर्मा, नई दिल्ली
36. वेद प्रकाष खुगसाल, नोयडा
37. प्रतिभा नैथाणी, मुम्बई
38. विजय लक्ष्मी बमोला, नई दिल्ली
39. देवेन्द्र कैन्थोला, थाने
40. गिरीष ढौंडियाल, मुम्बई
41. रतन सिंह असवाल, देहरादून
42. जयदीप सकलानी, देहरादून
43. बी. बी. पुरोहित, कौलागढ़, दे.दून
44. चन्द्रपाल सिंह रावत, दिल्ली
45. पुरशोत्तम सुन्दरियाल, पौड़ी गढ़वाल
46. उर्मिल थपलियाल, लखनऊ
47. डा. उमा षंकर थपलियाल, श्रीनगर,
48. डा. ख्यात सिंह चौहान, संगलाकोटी
49. षिवचरण धस्माना, देहरादून
50. बी.एस. षाह पण्डितवाड़ी, दे.दून
51. जे0 एस0 नेगी, ढुँग, रूद्रप्रयाग
52. ओमप्रकाष सेमवाल,चोपता, रूद्रप्रयाग
53. सूर्यकान्त धस्माना करनपुर दे.दून
54. श्रीमती भाग्यवती नेगी, लक्खीबाग दे0दून
55. राजीव ओबरॉय, देहरादून
56. श्रीमती सुलोचना परमार, देहरादून
57. राजेष्वर उनियाल, मुम्बई
58. धनीराम बेलवाल, देहरादून
59. विनोद जोषी, देहरादून
60. बी.एम. एल. असवाल, देहरादून

ईगास-बग्वाल की हार्दिक
शुभकामनाओं का दगड़

राजेन्द्र सिंह रावत

प्रधान ग्राम पंचायत टकारना
विकास खण्ड जौनपुर
टिहरी गढ़वाल

कार्यालय/निवास

ग्लेनिक इस्टेट,
नियर- कासमण्डा लोज
किताबघर, मसूरी
फोन न - 01376-224343

ग्राम- टकारना,
पो. ओ.द्वारगढ
जौनपुर टिहरी गढ़वाल

ईगास अर बग्वाळ की
शुभकामनाओं का दगड़

बी० डी० शर्मा

अध्यक्ष, उचितदर दुकानदार संघ
एवम् मीडिया प्रभारी
अखिल गढ़वाल सभा, देहरादून

नेशविला रोड़, देहरादून, उत्तराखण्ड

ईगास अर बग्वाल की
हार्दिक
शुभकामनाओं का दगड

बीरेन्द्र मोहन उनियाल

झण्डा मौहल्ला देहरादून, उत्तराखण्ड

With Best Compliment From

Akshit Comunication
&
Faith Properties

Pro. Sanjay Negi

Ladpur, Raipur Road, Dehradun (U.A)
Ph. 9897205335